

कवितावलीरामायण ॥

श्रीगुसाईंतुलसीदासरचित

जिसमें

सम्पूर्ण आशय रामायणका उक्तकविने अति रुचिर छन्दोंमें वर्णन कियाहै ॥

परमभक्त महात्माओं के उपकारार्थ

दशवींबार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छापीगई

सन् १९०४ ई० ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

कवितावलीरामायण ॥

तुलसीकृत बालकाण्ड ॥

सवैया ॥ अवधेशकेद्वारे सकारेगई सुतगोदकै भूपति लैनिकसे। अवलोकिहौं शोच बिमोचनको ठगिसीरही जोनठगे धिकसे ॥ तुलसी मनरंजन रंजित अंजन नैन सुखंजन जातकसे। सजनी शशिमें समशील उभै नव-नील सरोरुहसे बिकसे १ पगनूपुर औ पहुँची करकं-जनि मंजुबनी मणिमाल हिये। नवनील कलेवर पीत भँगा झलकैं पुलकैं नृपगोदलिये ॥ अरबिंदसों आनन रूपमरंद अनंदितलोचन भृंगपिये। मनमेंनबस्यो ऐसो बालकजो तुलसी जगमें फलकौन जिये २ तनकीद्युति श्यामसरोरुहलोचन कंजकीमंजुलताईहरैं। अतिसुंदर शोभित धूरि भरे छबि भूरि अनंग कि दूरिधरैं ॥ दमकैं दँतियां द्युतिदामिनि ज्यों किलकैंकल बालबिनोदकरैं। अवधेशके बालकचारिसदा तुलसीमनमंदिरमें बिहरैं ३ कबहूं शशि मांगत आरि करैं कबहूं प्रतिबिम्ब निहारि डरैं। कबहूं करताल बजाइकै नाचत मातुसबै मनमोद भरैं ॥ कबहूं रिसिआइ रहैं हठिकै पुनिलेत सोई ज्यहि लागिअरैं। अवधेशके बालक चारिसदा तुलसीमनमं-दिरमें बिहरैं ४ बरदन्त कि पंगति कुन्दकली अधराधर

पल्लव खोलनकी । चपला चमकै घनबीचजगै छबिमो-
तिनमाल अमोलनकी ॥ घुँघुरारि लटैं लटकैं मुखऊपर
कुंडल लोल कपोलन की । निवछावर प्राणकरै तुलसी
बलिजाउँ लला इन बोलन की ५ पदकंजनि मंजुबनी
पनही धनुही शरपंकज पाणिलिये । लरिकासँग खेलत
डोलतहैं सरयूतट चौहट हाटहिये ॥ तुलसी ऐसेबालक
से नहिंनेह कहा जपयोग समाधिकिये । नरवेखरशूकर
श्वान समान कहौ जगमें फल कौन जिये ६ सरयूबर
तीरहिंतीर फिरैं रघुबीर सखा अरुबीर सबै । धनुहींकर
तीरनिषंगकसे कटिपीत दुकूलनवीनफबै ॥ तुलसीतेहि
औसर लावनिता दश चारि नौ तीन इकीस सबै । मति
भारतिपंगुभई जो निहारि बिचारि फिरी उपमा न फबै७॥
घनाक्षरी ॥ क्षोणीमेंके क्षोणीपति छाजोंजिन्हें छत्रछाया
क्षोणीक्षोणीछाये क्षितिआये निमिराजके । प्रबलप्रचंड
बरिबंड बरबेष बपु बरिवेको बोलें बैदेही बर काजके ॥
बोलेबंदी विरुद बजाइबर बाजनेऊ बाजेबाजे बीरबाहु
धुनतसमाजके । तुलसी मुदितमन पुरनरनारि जेते बार
बारहेरें मुख औध मृगराजके ८ सीयके स्वयंबर समाज
जहां राजनिको राजनिके राजामहाराजा जानैनामको ।
पवन पुरन्दर कृशानु भानु धनदसे गुणके निधान रूप
धामशोभाकामको ॥ बानबलवान यातुधान पतिसारीखे
शूर जिन्ह गुमानसदा सालिम संग्राम को । तहां दश-
रथके समर्थनाम तुलसीके चपरि चढ़ायो चाप चंद्रमा
ललामको ९ मयन महनपुर दहनगहनजानि आनिकै
सबैकोसार धनुषगढ़ायो है । जनक सदशजेते भलेभले

भूमिपाल कियेबलहीन बलआपनो बढ़ायोहै ॥ कुलिश कठोर कूर्मपीठिते कठिनअति हठिनपिनाक काहूचपरि चढ़ायोहै । तुलसी सो रामके सरोज पाणि परशतहीं टूट्योमानो बारेतेपुरारिही पढ़ायोहै १० ॥ छप्पै ॥ डिगति उर्व्वि अति गुर्व्वि सर्व पर्व्वै समुद्रसर । व्याल बधिर तेहिकाल बिकल दिगपाल चराचर ॥ दिग गयंदलर-खरत परतदशकंध मुखभर । सुरविमान हिमभानु यानु संघटित परस्पर ॥ चौंकेबिरंचि शंकरसहित कोलकमठ अहिकलमल्यो । ब्रह्मंडखंड किधौं चंडध्वनि जबहिं राम शिवधनुदल्यो ११ ॥ घनाक्षरी ॥ लोचनाभिरामघनश्याम रामरूप शिशु सखी कहै सखी सों तू प्रेमपय पालिरी । बालक नृपालजूके ख्यालही पिनाक तोरयो मंडलीक-मंडली प्रतापदाप दालिरी ॥ जनकको सियाको हमारो तुलसीको सबको भावतो ह्वैहै मैं जोकह्यो कालिरी । कौ-शलाकीकोषि परतोषि तन वारियेरी रायदशरत्थ की बलायलीजै आलिरी १२ दूबदधिरोचना कनकथारभरि भरि आरतीसँवारि बरनारि चलींगावतीं । लीन्हें जय-माल करकंज सोहै जानकीके पहिरावो राघवजीको स-खियां सिखावतीं ॥ तुलसी मुदितमन जनकनगर जन झांकतीं झरोखेलागी शोभारानी पावतीं । मानहुँचकोरी चारु बैठीं निजनिज नीड चंदकी किरणिपीवैं पलकोन लावतीं १३ नगर निशानबरबाजै ब्योमदुंदुभी बिमान चढ़ि गानकैकै सुरनारि नाचहीं । जयति जयतिहूंपुर जयमाल रामउर बरषैं सुमन सुर रूरेरूपराचहीं ॥ ज-नकको पनजयो सबको भावतोभयो तुलसी मुदित रोम

रोम मोदमाचहीं । सांवुरो किशोर गोरी शोभापर तृण तोरी जोरीजियो युगयुग युवतिजन याचहीं १४ भले भूप कहत भले भदेस भूपनि सों लोकलखि बोलिय पुनीतरीति सारषी । जगदंबाजानकी जगतपितु रामभद्र जानिजिय जोही जो लगे न मुंहकारषी ॥ देखेहैं अनेक ब्याह सुनेहैं पुराणवेद बूझेहैं सुजानसाधु नरनारि पारषी । ऐसे सम समधी समाजन बिराजमान रामसे न वर दुलहीन सीय सारषी १५ बाणी बिधि गौरी हरि शेषहूं गणेशकही सहीभरी लोमश भुशुंडि बहुबारिषो । चारिदश भुवन निहारि नरनारि सब नारदसो परदान नारद सो पारिषो ॥ तिन्हकही जगमें जगमगाति जोरीएक दूजीको कहैयाको सुनैया चषचारिषो । रमा रमा रमणसुजान हनुमानकही सीयसी न तीय न पुरुषराम सारिषो १६ ॥ सवैया ॥ दूलह श्रीरघुनाथ बने दुलही सिय सुंदर मंदिरमाहीं । गावतिगीत सबैमिलि सुंदरि वेद युवाजुरि विप्रपढ़ाहीं ॥ रामकोरूप निहारति जानकि कंकणके नगकी परछाहीं । याते सबैसुधि भूलिगई करटेकिरही पलटारतिनाहीं १७ ॥ घनाक्षरी ॥ भूपमंडली प्रचंड चंडीश कोदंड खंड्यो चंडबाहुदंडजाकोताहीसो कहतहौं । कठिन कुठारधार धरिबेकी धीरताहि बीरता विदितताकीदेखिये चहतहौं ॥ तुलसी समाजराजतजि सो बिराजैआजु गाजौ मृगराज गजराज ज्योंगहतहौं । क्षोणी मैंन छांड़्यो छप्यो क्षोणिपको छोनाछोटो क्षोणिप छपन वाको बिरुद बहतहौं १८ निपट निडरि बोलेबचन कुठारपाणि मानीत्रास औनिपन मानौमौनतागही ।

रोखेमाखे लषण अकनि अनखोहींश्रातें तुलसी बिनीत बाणी बिहँसि ऐसीकही ॥ सुयश तिहारे भरे भुवननि भृगुनाथ प्रकट प्रतापआप कह्योसो सबैसही । टूट्योसो न जुरैगो शरासन महेशजू को रावरी पिनाक में सरी-कता कहांरही १९ ॥सवैया॥ गर्भकेअर्भक काटनको पटु धार कुठार कराल है जाको । सोईहौं बूझत राजसभा धनुकैदलिहो दलिहौं बलताको ॥ लघुआनन उत्तरदेत बड़े लरिहैमरिहैं करिहै कछुसाको । गोरो गरूर गुमान भर्योकहौ कौशिकछोटोसो ढोटोहैकाको २० ॥ घनाक्षरी॥ मख राखिबेके काज राजमेरे संगदये दले यातुधान जे जितैआ बिबुधेशके । गौतमकीतीयतारी मेटेअघ भूरि भारी लोचन अथितभये जनक जनेशके ॥ चंड बाहुदंड बल चंडीश कोदण्ड खंड्यो ब्याही जानकी जीतेनरेश देशदेशके । साँवरे गोरे शरीर धीर महाबीर दोऊ नाम रामलषणकुमार कोशलेशके २१ ॥ सवैया॥ कालकराल नृपालनके धनुभंग सुने फरशालिये धाये । लक्षणराम बिलोकि सप्रेम महारिसिहा फिरि आंखि दिखाये ॥ धीर शिरोमणि बीरबड़े बिनयी बिजयी रघुनाथ सोहाये । लायक हो भृगुनायक सो धनुशायक सौंपि सुभाय सिधाये २२ ॥ इतिबालकांडसमाप्तः ॥ १॥

अथ अयोध्याकाण्डः ॥ सवैया ॥ कीरकेकागरज्यौंनृप चीर बिभूषण उप्पम अंगनिपाई । औधतजीमगबासके रूख ज्यों पंथकेसाथ जोलोग लुगाई ॥ संगसुबंधु पुनीत प्रिया मानो धर्मक्रिया धरिदेह सोहाई । राजिव लोचन रामचले तजिबापको राज बटाऊ की नाई २३ कागर

फीर ज्यों भूषण चीर शरीर लस्यो तजि नीर ज्योंकाई । मातु पिता प्रिय लोग सबै सनमानि सुभाय सनेह सगाई ॥ संग सुभामिनि भाइ भलो दिन द्वै जनु औधहुँते पहुनाई । राजिव लोचन राम चले तजि बापको राज बटाऊकी नाई २४ ॥ घनाक्षरी ॥ शिथिल सनेहकहै कौशला सुमित्रासों मैं न लखी सवति सखी भगिनीज्यों सेईहै । कहै मोहिं मैया कहो मैं न मैया भरतकी बलैया लैहों भैया तेरी मैयाकैकेईहै ॥ तुलसीसरलभाय रघुराय माय मानी काय मन बानीहूं न जानीकीमतेई है । बाम बिधि मेरो सुख सिरिस सुमनसम ताको छलछुरीकोह कुलिशलैटेई है २५ कीजैकहा जीजीजू सुमित्रा परिपांयकहै तुलसी सहावै बिधि सोई सहियतुहै । रावरेसुभाय रामजन्महीं तैं जानियत भरत की मातुको कीवोशोचियतुहै ॥ जाइ राजघर ब्याह आई राजघर महाराज पूत पायेहूं न सुख लहियतुहै । गेह सुधागेह तेऊ मृगहूं मलीन कियो ताहूपर बाहुबिन राहु गहियतुहै २६ ॥ सवैया ॥ जासु के नाम अजामिल से खल कोटि नदी भव बूड़त काढ़े । जो सुमिरे गिरि मेरु शिलाकन होत अजाखुर बारिधि बाढ़े ॥ तुलसी जेहि के पद पंकज ते प्रकटी तटनी जोहरै अघ गाढे । तेप्रभु या सरितातरिबे कहँ मांगत नावकरारे ह्वै ठाढ़े २७ यहि घाटते थोरिक दूरिअहै कटिलौं जल थाह देखाइहौं जू । परशेपगधूरि तरै तरनी घरनी घर क्यों समुझाइहौं जू ॥ तुलसीअवलम्ब न और कछू लरिका केहिभांति जिआइहौं जू । बरु मारियेमोहिं बिना पगधोये हौंनाथ न नाउ चढ़ाइ

हौं जू २८ रावरो दोष न पांयन को पगधूरि को भूरि प्रभाव महा है। पाहन ते बन बाहन काठ को कोमल है जल खाइ रहा है॥ पावन पांय पखारिकै नाउ चढ़ाइहौं आयसु होत कहा है। तुलसी सुनि केवटके बरबैन हँसे प्रभु जानकिओरहहा है २९॥ घनाक्षरी॥ पातभरीसहरी सकल सुतवारे बारे केवटकी जाति कछू वेदनपढ़ाइहौं। सब परिवार मेरे याही लागि राजाजी हौं दीन बित्त हीन कैसे दूसरी गढ़ाइ हौं॥ गौतमकी घरनी ज्यों तरनी तरैगी मेरी प्रभुते निषादह्वैकै बाद न बढ़ाइहौं। तुलसी के ईश रामरावरेसों सांची कहौं बिना पग धोये नाथ नाउना चढ़ाइहौं ३० जिनको पुनीत वारि सिरसि बहैंपुरारि त्रिपथ गामिनी तु वेद कहैं गाइकै। जिनको योगींद्र मुनि बृन्द देव देहधरि करत बिबिध योगजप मनलाइकै॥ तुलसी जिनकी धूरि परशि अहल्यातरी गौतम सिधारे गृहगौनो सो लेवाइकै। तेई पांइ पाइकै चढ़ाइनावधोये बिनु ख्वैहौं न पढ़ावनीकेह्वैहौं न हँसाइकै ३१ प्रभुरुखपाइकै बुलायबालघरनिको बंदिकैचरणै चहुंदिशि बैठे घेरिघेरि। छोटो सो कठौताभरि आनि पानी गंगाजूको धोइपाइँ पियत पुनीतबारि फेरिफेरि॥ तुलसी सराहैं ताको भाग सानुराग सुरबरषैंसुमन जय जय कहैं टेरिटेरि। बिबुध सनेहसानी बाणी असयानी सुनि हँसे राघोजानकी लषणतनहेरिहेरि ३२॥ सवैया॥ पुरते निकसी रघुबीर बधू धरिधीर दये मग में डगद्वै। झलकीं भरिभालकनीजलकी पटसूखिगयेमधुराधरवै॥ फिरि बूझति हैं चलनोव कितो पिय पर्णकुटी करिहौ

कितहृवै । तियकीलखि आतुरता पियकी अंखियांअति
चारु चलीं जलच्वै ३३ जलकोगये लक्ष्मण हैं लरिका
परिखौ पियछांहघरीकहृवैठाढ़े । पांछि पसेउ बयारिकरों
अरु पायँ पखारिहौं भूभुरिढाढ़े ॥ तुलसी रघुबीरप्रिया
श्रमजानिकै बैठिबिलम्बसों कंटककाढ़े । जानकीनाहको
नेह लख्यो पुलकीतन बारिबिलोचन बाढ़े ३४ ठाढ़े हैं
नवद्रुम डार गहें धनु कांधे धरे कर शायकलै । बिकटी
भृकुटी बड़ड़ी अंखियां अनमोल कपोलनकी छबिहै ॥
तुलसीऐसीमूरति आनुहिये जड़डारुधौं प्राण निछावरि
कै । श्रम सीकर सांवरि देह लसै मानो राशि महातम
तारकमै ३५ ॥ घनाक्षरी ॥ जलजनयनजलजाननजटा
हैं शिर यौवन उमंग अंग उदित उदारहैं । सांवरेगोरेके
बीच भामिनि सुदामिनीसी मुनिपट धारेउर फूलनिके
हारहैं ॥ करनि शरासन शिलीमुख निषंगकटि अतिही
अनूप काहू भूपके कुमारहैं । तुलसीबिलोकिकै तिलोक
के तिलक तीनि रहैनरनारिज्यों चितैर चित्रसार हैं ३६
आगे सोहैं सांवरे कुंवर गोरे पाछे काछे आछेमुनिवेष
धरे लाजत अनंगहैं । बाण बिशिखासन बसन बनहींके
कटि कसे हैं बनाइ नीके राजत निषंगहैं ॥ साथ निशि-
नाथ मुखी पाथ नाथ नंदिनी सी तुलसी बिलोके चित
लाइ लेत संगहैं । आनँद उमंग मन यौवन उमंग तन
रूपकेउमग उमगत अंग अंगहैं ३७ सुन्दरबदन सरसी-
रुह सोहाये नैन मंजुल प्रसून माथे मुकुट जटानिकै ।
असनि शरासन लसत शुचि शर कर तूण कटि मुनि
पट लूटकपटनिकै । नारि सुकुमारि संग जाके अंग उ-

घटिकै विधि विरचे बरूथ विद्युच्छटनिके । गोरेको बरन देखे सोनो न सलोनो लागे सांवरे बिलोके गर्व्व घटत घटनिके ३८ बल्कल बसन धनु बाण पाणि तूण कटि रूपके निधान घनदामिनी वरणहैं । तुलसी सुतीय संग सहजसोहाये अंग नवलकमलहूते कोमलचरणहैं ॥ और सोबसत औरेरति और रतिपति मूरति विलोक तनमन कें हरणहैं । तापस वेषैं बनाये पथिक पंथे सोहाये चले लोकलोचननि सुफल करणहैं ३९॥ सवैया ॥ बनिताबनी श्यामलगौरके बीच विलोकहुरी सखीमोहिसीह्वै । मगयोगन कोमल क्यों चलिहैं सकुचाति मही पदपंकजछ्वै ॥ तुलसी सुनि ग्रामबधू बिथकीं पुलकीं तन औचलेलोचनच्वै । सब भांति मनोहर मोहन रूप अनूपहैं भूपके बालकद्वै ४० सांवरे गोरे सलोने सुभाय मनोहरता तजि मैन लियोहै । बाल कमान निषंग कसे शिरसोहैं जटा मुनि वेष कियो है ॥ संगलिये विधु बैनी बधू रति को जेहि रंचक रूप दियो है । पाँयन तो पनहीं न पयादेहि क्यों चलिहैं सकुचात हियोहै ४१ रानी में जानी अयानी महा पवि पाहनहूं ते कठोर हियोहै । राजहु काज अकाज न जान्यो कह्योतियको जेहिकानकियोहै ॥ ऐसी मनोहर मूरतिये बिछुरे कैसे प्रीतम लोग जियोहै । आंखिन में सखि राखिबे योग इन्हैं किमिकै बनबास दियोहै४२ शीशजटा उरबाहुबिशाल बिलोचनलालतिरीछीसी भोंहें । तूण शरासन बाणधरे तुलसीबनमारगमें सुठि सोहैं ॥ सादर बारहिबार सुभाय चितैतुम्हरोहमरो मनमेहैं । पूछत ग्रामबधू सियसों कहो सांवरोसो सखि

रावरो कोहै ४३ सुनिसुन्दरबानि सुधारससानि सयानिहैं जानकी जानिभली। तिरछे करि नैन दैसैन तिन्हें समुझाइकछू मुसुकाइचली॥ तुलसी तेहिऔसर सोहैं सबै अवलोकति लोचनलाहुअली। अनुराग तड़ागमें भानु उदै बिकसी मानोमंजुल कंजकली ४४ धरिधीरकहैंचलु देखिय जाइ जहां सजनी रजनी रहिहैं। कहिहैं जगपोचनशोचकछू फललोचन आपनतौ लहिहैं॥ सुखपाइहैं कान सुने बतियां कल आपुसमें कछु पै कहिहैं। तुलसी अतिप्रेमलगी पलकें पुलकीलखि रामहिये महिहैं ४५ पद कोमलश्यामल गोरकलेवर राजतकोटि मनोज लजाये। करबाणशरासन शीशजटा सरसीरुहलोचन सोनसोहाये॥ जिनदेखे सखी सतभावहुते तुलसीतिन तौ मनफेरिनपाये। यहि मारग आजुकिशोर बधू बिधुबैनि समेत सुभाय सिधाये ४६ मुखपंकजकंज बिलोचन मंजु मनोज शरासनसी बनिभौंहैं। कमनीय कलेवर कोमलश्यामल गौरकिशोर जटाशिरसोहैं॥ तुलसी कटितूण धरे धनुबाण अचानक दृष्टिपरीतिरछौहैं। केहि भांतिकहौं सजनीतोहिसों मृदुमूरति द्वैनिवसी मनमोहैं ४७ प्रेम सो पीछे तिरीछे प्रियाहि चितै चितु दैचले लैचितचोरैं। श्यामशरीर पसेहुलसै हुलसै तुलसी छबि सो मनमोरैं॥ लोचनलोल चलै भृकुटी कलकामकमाननसों तृणतोरैं। राजतराम कुरंगकेसंग निषंगकसे धनुसोंशरजोरैं ४८ शरचारिकचारु बनाइकसे कटिपाणि शरासनशायकलै। बनखेलत रामफिरैं मृगया तुलसी छबिसोबरणै किमिकै॥ अवलोकिअलौकिक रूपमृगी

मृग चौंकिचकै चितवैं चितदै ।.न डगै न भगै जियजा-
निशिलीमुख पंचधरे रतिनायकहै ४९ बिंधकेबासी उ-
दासी तपोब्रत धारीमहा बिनुनारि दुखारे । गौतमतीय
तरी तुलसी सो कथासुनिभेमुनिबृन्दसुखारे ॥ ह्वैहैं शिला
सब चन्दमुखी परशेपद मंजुलकंज तिहारे । कीन्हिभली
रघुनायकजू करुणाकरि काननको पगुधारे ५० ॥

इत्ययोध्याकांडःसमाप्तः २ ॥

अथआरण्यकांडप्रारम्भः ॥ सवैया ॥ पंचबटी बर
पर्णकुटीतर बैठेहैं राम सुभायसोहाये । सोहैं प्रिया प्रिय
बंधुलसै तुलसी सबअंग घनेछबिछाये॥देखि मृगामृग-
नैनी कहै प्रिय बैनते प्रीतमके मनभाये । हेम कुरंग के
संग शरासन शायकलै रघुनायकधाये ५१ ॥

इत्यारण्यकांडसमाप्तः ३ ॥

अथकिष्किन्धाकांडप्रारम्भः ॥ घनाक्षरी ॥ जबअंग-
दादिनकी मतिगतिमन्दभई पवनकेपूतको न कूदिबे को
बलुगो । साहसी ह्वै शैलपर सहसासिकिलआइ चितवत
चहुँओरऔरनिकोकलुगो ॥ तुलसीरसातलको निकसि
सलिलआयो कोलकलमल्यो अहिकमठको बलुगो॥चा-
रिहूंचरणकेचपेटचापेचिपटिगो उचकेउचकिचारिअंगु-
लअचलुगो ५२ ॥ इतिकिष्किन्धाकांडसमाप्तः ४ ॥

अथसुन्दरकाण्डप्रारम्भः ॥ घनाक्षरी ॥ बासवबरुण
विधिबनते सुहावनो दशाननको कानन बसन्त को शृं-
गारसो । समयपुरानेपात परतडरतबात पालतलालत
रतिमारको बिहारसो ॥ देखे बर वापिका तड़ाग बाग
को बनाव रागवश भो विरागी पवनकुमारसो । सीयकी

दृशा विलोकि बिटप अशोकतर तुलसी विलोक्यो सो तिलोक शोकसार सो ५३ माली मेघमाल बनपाल बिकराल भट नीके सबकाल सींचे सुधासार नीर के। मेघनाद ते दुलारो प्राणते पियारो बाग अति अनुराग जिय यातुधान धीरके॥ तुलसीसो जानि सुनिसीख को दरशपाइ पैठो बाटिका बजाइ बलरघुबीरके। विद्यमान देखत दशाननको काननसो तहसनहस कियो साहसी समीरके ५४ बसनबटोरि बोरिबोरि तेलतमीचर खोरि खोरि धाइआइ बांधतलँगूर हैं। तैसोकपि कौतुकीडेरात ढीलेगातकैकै लातके अघातसहै जीमेंकहै कूर हैं॥ बाल किलकारी कै कै तारीदैदै गारीदेत पाछेलागे बाजत निशानढोलतूरहैं। बालधी बढ़नलागी ठौरठौर दीन्ही आगी बिन्ध्य की दवारि कैधौं कोटिशत सूरहैं ५५ ला-इलाइ आगिभागे बालजाल जहांतहां लघु कै निबुकि गिरिमेरुते बिशालभो। कौतुकी कपीशकूदि कनककँ-गूराचढ़्यो रावणभवन चढ़ि ठाढ़ो तेहिकालभो॥ तुल-सी बिराज्यो व्योम बालधी पसारी भारी देखे हहरात भट कालसो करालभो। तेजको निधान मानो कोटिक कृशानु भानु नख बिकराल मुख तैसो रिसिलालभो ५६ बालधी बिशाल बिकराल ज्वाल जाल मानो लंक ली-लिबेको काल रसना पसारीहै। कैधौं व्योमबीथिका भरे हैं भूरि धूमकेतु बीररसबीर तरवारसी उघारी है॥ तुल-सी सुरेशचाप कैधौं दामिनी कलाप कैधौंचली मेरुते कृशानु सरिभारीहै। देखैं यातुधान यातुधानी अकुला-नी कहैं काकन उजार्‍यो अब नगर प्रजारी है ५७ जहां

जहां बुबुकि बिलोकि बुबुकारी देत जरत निकेत धावोधा-
वोलागि आगिरे। कहां तात मात भ्रात भगिनी भामिनी
भाभी ढोटो छोटो छोहरा अभागे भोड़े भागिरे ॥ हाथी
छोरो घोड़ाछोरो महिषवृषभछोरो छेरीछोरो सोवैसोज-
गावो जागि जागिरे। तुलसी बिलोकि अकुलानी यातु-
धानीकहैं बारबार कह्योपिय कपिसोंन लागिरे ५८ देखि
ज्वालजाल हाहाकार दशकंध सुनि कह्यो धरोधरोधाये
बीर बलवानहैं। लिये शूलशेल पाश परिघ प्रचण्डदण्ड
भाजन समीरधीरधरे धनुबानहैं ॥ तुलसी समिधसौंजी
लंक यज्ञकुंड लखि यातुधान पुंगीफल यवतिल धानहैं।
सुवासो लँगूर बलमूल प्रतिकूलहवि स्वाहामहा हांकि
हांकि हुने हनुमान हैं ५९ गाज्यो कपिगाज ज्यों विरा-
ज्यो ज्वालजालयुत भाजे बीर धीर अकलाइ उठ्यो रा-
वनो। धावो धावो धरो सुनि धाये यातुधान धारि बारि
धारा उलदै जलद जौन सावनो॥ लपट झपटझहराने
हहराने बात भहराने भटपर्‌यो प्रबलपरावनो । हकनि
ढकेलि पेलि सचिव चले लै ठेलि नाथ न चलैगो बल
अगिन भयावनो ६० बड़ो विकराल वेष देखि सुनि
सिंहनाद उठ्यो मेघनाद सविषाद कहैरावनो। बेगाजि-
तो मारुत प्रताप मार्तंडकोटि कालहू करालता बड़ाई
जितो बावनो॥ तुलसी सयाने यातुधाने पछिताने कहैं
जाको ऐसो दूतसो साहिब अबै आवनो। काहेकी कु-
शल रोषे रामबाम देवहूकी विषम बलीसों बादि बैरको
बढ़ावनो ६१ पानी पानी पानी सबरानी अकुलानीकहैं
जातहैं परानी गतजानी गज चालिहै। बसन बिसारे

मणिभूषण सँभारत न आनन सुखाने कहैं क्योंहों कोउ पालिहै ॥ तुलसी मदोवै मींजैहाथ धुनिमाथ कहै काहू कान कियो न मैं केतो कह्यो कालिहै । बापुरे विभीषण पुकारि बारबार कह्यो बानर बड़ीबलाइ घनेघर घालिहै ६२ कानन उजारयो तो उजारयो न बिगारयो कछु बानर बिचारो बांधि आन्यो हठिहारसों । निपट निडर देखि काहू न लख्यो विशेषि दीन्हों न छुड़ाइ कहिकुल के कुठारसों ॥ छोटे औ बड़ेरे मेरे पूतऊ अनेरेसब सांपनिसों खेलैंमेलैं गरे छुराधारसों । तुलसी मदोवै रोइ रोइकै बिगोवै आपु बारबार कह्यों मैं पुकारि दाढ़ीजारसों ६३ रानी अकुलानी सब डाढ़त परानीजाहिं सकैं न विलोकि वेष केशरी कुमारको । मींजि मींजि हाथ धुनिमाथ दशमाथ तिय तुलसी तिलो न भयो बाहिर अगारको ॥ सब असबाब डाढ़े मैंन काढ़े तैंन काढ़े जियकी परी सँभार सहन भँडारको । खीझति मदोवै सविषाद देखि मेघनाद क्यों न लुनियत सब याही दाढ़ीजारको ६४ रावणकी रानी यातुधानी बिलखानी कहै हाहा कोऊ कहै बीस बाहु दशमाथसों । काहे मेघनाद काहे काहेरे महोदर तू धीरज न देत लाइलेत क्यों न हाथसों ॥ काहे अतिकाय काहे काहेरे अकंपन अभागे तीय त्यागे भोंड़े भागे जात साथसों । तुलसी बढ़ाइ बाद शालत बिशाल बैर याही बल बालिसों विरोध रघुनाथसों ६५ हाट बाट कोट ओट अटन अगारपौरि खोरि खोरि दौरि दौरि दीन्ही अति आगिहै । आरत पुकारत सँभारत न कोऊ काहू ब्याकुल जहां सो तहां

लोक चलै भागिहै ॥ बालधी फिरावै बार बार झहरावै झरै बूंदियासी लंक पघिलाइ पागि पागि है । तुलसी बिलोकि अकुलानी यातुधानी कहैं चित्रहूं के कपिसों निशाचर न लागिहै ६६ लागि लागि आगि भागि भागि चले जहां तहां धीयको न माय बाप पूत न सभारहीं । छूटे बार बसन उघारे धूम धुंधअंध कहैं बारे बूढ़े बारि बारि बार बारहीं ॥ हयहिहिनात भागेजात घहरात गज भारीभीर टेलि पेलिरौंदि खौंदि डारहीं । नामलै चिलात बिललात अकुलात अति तात तात तौंसियत झौंसियत झारहीं ६७ लपट कराल ज्वाल जाल माल दहूं दिशि धूम अकुलाने पहिचाने कौन कहिरे । पानीको ललात बिललात जरे गात जातपरे पाइँमाल जात भ्रात तू निबाहिरे ॥ प्रिया तू पराहि नाथ नाथ तू पराहि बाप बाप तू पराहि पूत पूत तू पराहिरे । तुलसी बिलोकि लोक ब्याकुल बेहालकहैं लेहिदशशीश अब बीस चषुचाहिरे ६८ बीथिका बजार प्रतिअटनि अगारप्रति पवरि पगारप्रति बानर बिलोकिये । अर्द्ध ऊर्द्धबानर विदिशि दिशिबानरहैं मानोरह्यो हैमभरिबानर तिलोकिये ॥ मूंदे आंखि हियमें उघारे आंखि आगे ठाढ़ो धाइ जाइ जहँ तहँ और कोऊ कोकिये । लेहु अब लेहु तब कोऊन सिखावो मानो सोइ सतराइजाइ जाहि जाहि रोकिये ६९ एक करै धौंज एक कहै काढ़ो सौंज एक औंजि पानी पीकै कहै बनत न आवनो । एक परे गाढ़े एक डाढ़तहि काढ़े एक देखतहैं ठाढ़े कहैं पावक भयावनो ॥ तुलसी कहत एक नीके हाथ लाये कपि

अजहूं न छांड़ै बाल गालको बजावनो। धावरे बुझावरे कि बावरे जियावरे औरे आगिलागी न बुझावै सिंधु सावनो ७० कोपिदशकंध तब प्रलय पयोद बोले रावण रजाइ धाइ आये यूथजोरिकै। कह्यो लंकपति लंकबरत बुतावोबेगि बारन बहाइ मारौ माहँबारि बोरिकै॥ भले नाथ नाइमाथ चलेपाथ प्रदनाथ बरषैं मुशलधार बार बार घोरिकै। जीवनते जागी आगी चपरि चौगुनीला-गी तुलसी भभरि मेघ भागे मुखमोरिकै ७१ इहां ज्वाल जरेजात क्षांगलानि गेरेगात सूखे सकुचात सब कहत पुकारहैं। युग षटभानु देखे प्रलय कृशानु देखे शेषमुख अनल बिलोके बार बारहैं॥ तुलसी सुन्यो न कानस-लिलसर्पी समान अति अचरज किये केशरी कुमारहैं। बारिद बचन सुनि धुनेशीश सचिवन्हि कहै दशशीश ईश बामता बिकारहैं ७२ पावक पवन पानी भानु हिम-वान यम काल लोकपाल मेरेडर डांवा डोलहैं। साहिब महेश सदा शंकित रमेश मोहिं महातप साहस बिरंचि लिये मोलहैं॥ तुलसी तिलोक आज दूजो न बिराजै राज बाजे बाजे राजनि के बेटी बेटा ओलहैं। कोहैंईश नाम बांम बाम होत मोहूं सन मालवान रावरेके बावरे से बोल हैं ७३ भूमि भूमिपाल ब्याल पालक पताल नाक पाल लोकपाल जेते सुभट समाजहैं। कहैं माल-वान यातुधान पतिरावरे को मनहुं अकाज आनै ऐसो कौन आजहैं॥ राम कोह पावक समीर सीय श्वास कीश ईश बामता बिलोकु बानरके ब्याज हैं। जारत प्रचारि फेरि फेरिसो निशंक लंक जहां बांको बीर तोसो शूर

शिरताज हैं ७४ पान पकवान बिधि नाना के सँधानो सीधो बिविध विधान धान बरत बखारहीं। कनक किरीट कोटि पलँग पेटारे पीढ़ कांढ़त कहार सब जरेभार भारहीं॥ प्रबलपावक बाढ़े जहँ काढ़े तहँडाढ़े झपटलपट भरे भवन भँडारहीं। तुलसी अगार न पगार न बजार बचो हाथी हथसार जरे घोरे घोरसारहीं ७५ हाटबाट हाटक पघिल चलो घी सो घनो कनक कराहीलंक तलफत तायसों। नाना पकवान यातुधान बलवान सब पागि पागि ढेर कीन्ही भलीभांति भायसों॥ पाहुने कृशानु पवमान सो परोसो हनुमान सनमानिकै जेवांये चित चायसों। तुलसी निहारि अरि नारि दैदैगारि कहैं बावरे सुरारि बैरकीन्हे राम रायसों ७६ रावण सो राज रोग बाढ़त बिराट उर दिन दिन बिकल सकल सुख रांकसों। नाना उपचार करि हरि सुरसिद्ध मुनि होत न विशोक ओतपावै न मनाकसों॥ रामकी रजाइते रसाइनी समीर सूनु उतरि पयोधि पार शोधिसर बांकसों। यातुधान भूपबुट पुटपाक जातरूप रतन यतन जारि कियोहै मृगांकसों ७७ जारि बारिकै बिधूम बारिधि बुताइ लूम नाइमाथो पगनिभो ठाढ़ो करजोरिकै। मातु कृपा कीजै सहिदानि दीजै सुनिसीय दीन्ही है अशीष चारु चूड़ामणि छोरिकै॥ कहा कहौं तात देखे जात ज्यों बिहात दिन बड़ी अवलंबही सो चले तुम तोरिकै। तुलसी सनीर नैन नेहसों शिथिल बैन बिकल बिलोकि कपि कहत निहोरिकै ७८ दिवस छ सात जात जानबे न मातु धरु धीर अरि अंतकी अवधि रही थोरिकै।

बारिधि बँधाइ सेतु ऐहैं भानुकुलकेतु सानुज कुशल कपि कटक बटोरिकै ॥ बचन बिनीत कहि सीताको प्रबोध करि तुलसी त्रिकूट चढ़ि कहत डफोरिकै । जै जै जानकीश दशशीश करि केशरी कपीशकूद्यो बात जात बारिधि हलोरिकै ७९ साहसी समीर सूनु नीर निधि लाँघि लखि लंक सिद्ध पीठ निशि जागोहैं मशानसो । तुलसी बिलोकि महा साहस प्रसन्न भई देबी सीय सारिषी दियोहै बरदान सो ॥ बाटिका उजारि अक्षधारि मारि जारि गढ़ भानुकुल भानुकोप्रताप भानु भानुसो । करत बिशोक लोक कोकनद कोक कपि कहैं जाम्बवंत आयो आयो हनुमानसो ८० गगन निहारि किलकारी भारी सुनि हनुमान पहिंचानि भयेसानँद सचेतहैं । बूड़त जहाज बाच्यो पथिक समाज मानो आजु जाये जानि सब अंकमाल देतहैं ॥ जैजै जानकीशजैजै लषण कपीश कूदैं कपि कौतुकी नटत रेत रेतहैं । अंगद मयंद नलनील बलशील महा बालधी फिरावैं मुख नानागति लेतहैं ८१ आये हनुमान प्राण हेतु अंकमाल देत लेत पगधूरि एक चुंबत लँगूरहैं । एक बूझैं बार बार सीय समाचार कहौ पवनकुमार भो बिगत श्रम शूलहैं ॥ एक भूखे जानि आगे आनि कंदमूल फल एकपूजे बाहुबल मूल तोरि फूलहैं । एक कहैं तुलसी सकल सिद्ध ताके जाके कृपापाथ नाथ सीतानाथ सानुकूल हैं ८२ सीय को सनेह शील कथा तथा लंक कहै चलेजात चायसों सिराने पथ क्षणमें । कह्यो युवराज बोलि बानर समाज आजु खाहुफल सुनि पेलिपैठे मधुबनमें ॥ मारेबागवान

ते पुकारत दिकनगे उजारे बाग अंगदादि खाये घाय तन में । कहै कपिराज करिआये कीशकाज महाराजकी शपथ महामोद मेरे मनमें ८३ नगर कुबेरको सुमेरकी बराबरी बिरंचिबुद्धिको बिलास लंक निर्माणभो । ईशहि चढ़ाये शीश बीसबाहु बीरतहाँ रावणसो राजाराज तेज को निधानभौं ॥ तुलसी त्रिलोककी समृद्धि सौंज संपदा सकेलि चाकिराखी राशि जागर जहानभो । तीसरे उपास बनबास सिंधुपास सो समाज महाराजजीको एक दिन दानभो ८४ इतिसुन्दरकाण्डसमाप्तः ॥ ५ ॥

अथलंकाकाण्ड प्रारम्भः ॥ घनाक्षरी ॥ बड़े बिकराल भालुबानर बिशालबड़े तुलसी बड़े पहाड़ लै पयोधि तोपिहैं । प्रबल प्रचण्ड बलबण्ड बाहुदण्ड खंडि मंडि मेदिनीको मंडलीक लीकलोपिहैं॥ लंकदाहदेखेन उछाह रह्यो काहूको कहत सब सचिव पुकारि पांवरोपि हैं । बाचिहैं न पाछे त्रिपुरारिहू मुरारिहू केकोहू रणारि को जो कोशलेश कोपिहैं ८५ त्रिजटाकहति बारबार तुलसी खरीसो राघवबाण एकही समुद्र सातो शोषिहैं। सकुल सँहारि यातुधान धारि जंबुकादि योगिनी जमाति कालिका कलाप तोषिहैं ॥ राजदै निवाजिबो बजाइकै बिभीषणको बजैगोब्योम बाजने बिबुध प्रेम पोषिहैं। कौन दशकंध कौनमेघनाद बापुरोको कुम्भकर्ण कीटजबराम रणरोषिहैं ८६ बिनय सनेह सो कहतिसिय त्रिजटासों पायेकछुसमाचार आरज सुवनके। पाये जुबँधाये सेतु आयउतरे भानुकुलकेतु आये देखिदेखि दूतदारुणदुवनके ॥ बदन मलीन बलहीन देखिदेखि मानो मिटे

घटे तमीचर तिमिर भुवनके। लोकपति शोक कोक मूंदेकपि कोकनद दंडद्वैरहेहैं रघुआदित उवनके ८७॥ झूलना ॥ सुभुज मारीच खर त्रिशिर दूषण बली बधत ज्यहि दूसरो शरनसाध्यो । आनिपरभाम विधिबाम त्यहि रामसों सकत संग्राम दशकंध कांध्यो ॥ समुझि तुलसीश कोपि कर्म घरघरघैरु बिकल सुनि सकल पाथोधि बांध्यो । बसत गढ़बंक लंकेश नायक अकृत लंकनहिंखात कोउ भातरांध्यो ८८ ॥ सवैया ॥ बिश्व-जयी भृगुनायकसे बिनु हाथ भये हनिहाथ हजारी। बातुल मातुलकी न सुनी शिष कातुलसी कपिलंक न जारी ॥ अजहूंतेभलो रघुनाथ मिलो फिरि बूझिहै को गज कौन गजारी । कीर्त्ति बड़ी करतूति बड़ी जनबात बड़ी सो बड़ोइ बजारी ८९ जब पाहन भावन बाहनसे उतरेबनरा जैजै रामरढ़े । तुलसी लियेशैलशिला सब सोहत सागर ज्यों बलबारि बढ़े ॥ करिकोप करे रघुबीर की आयसु कौतुकही गढ़कूदिचढ़े । चतुरंगचमूपल में दलिके रण रावण राड़को हाड़गढ़े ९० ॥ घनाक्षरी॥ बिपुल बिशाल बिकराल कपि भालु मानो काल बहुवेष धरे धाये किये करषा । लिये शिला शैलतोरि ताल औ तमालतोरि तोपै तोयनिधि सुरको समाज हरषा॥ डगे दिगकुंजर कमठ कोल कलमल डोले धराधर धारि धराधर धरषा । तुलसी तमकिचलैं राघवकी शपथकरैं को करै अटक कपि कटक अमरषा ९१ आये शुकसारन बोलाये ते कहनलागे पुलकि शरीर सैना करत फहमही । महाबली बानर बिशाल भाल कालसे कराल

हैं रहे कहां समाहिंगे कहांमही ॥ हँस्यो दशकंध रघुनाथ को प्रतापसुनि तुलसी दुरावै मुख सूखत सहमही। राम के ब्रिरोध बुरो बिधि हरि हरहूको सबको भलो है राजा रामके रहमही ९२ आयो आयो आयो सोइ बानर ब-होरि भयो शोर चहूंओर लंकआये युवराजके। एक काढ़े सौंज एक धौंजकरे कहा ह्वैहै पोचभई महाशोच सुभट समाजके ॥ गाज्यो कपिराज रघुराजकी शपथकरि मूंदेकान यातुधान मानो गाजे गाजके। सहमि सुखात बातजात की सुरति करि लवाज्यों लुकात तुलसी झपेटे बाजके ९३ दूषण ब्रिराध खर त्रिशिरा कबंधबधे तालऊ करालबेधे कौतुकहै कालिको। एकही बिशिख बश भये बीर बांकुरे सो तोहूहै बिदित बल महाबली बालिको॥ तुलसी कहतहित मानत न नेकुसंग मेरोकहा जैहै फल पैहै तू कुचालिको। बीर करि केशरी कुठार पानि मानि हारि तेरी कहाचली बूटेतोसो गनैघालिको ९४॥सवैया॥ तोसोंकहों दशकन्धररे रघुनाथ ब्रिरोध न कीजिय बौरे। बालिबली खरदूषण औौर अनेक गिरेजेते भीतमेंदौरे॥ ऐसिय हाल भई तोहिको न तो लै मिलु सीय चहै सुख जौरे। रामके रोष न राखि सकैं तुलसी बिधि श्रीपति शंकरसौरे ९५ तू रजनीचरनाथ महा रघुनाथके सेवक को जनहोहौं। बलवान है श्वान गलीअपनी त्वहिंलाजं न गालबजावतसोहौं॥ बीसभुजा दशशीशहरौं न डरौं प्रभु आयसु भंगतेजोहौं। खेतमेंकेहरिज्योंगजराज दलौं दल बालिको बालक तोहौं ९६ कोशलराज के काजहौं आजु त्रिकूट उखारि लै बारिधि बोरौं। महाभुजदंड द्वै

अंडकटाह चपेटके चोट चटाक दै फोरौं ॥ आयसुभंगते जोनडरौं सब मींजि सभासद शोणितघोरौं । बालिको बालक तौ तुलसी दशहूंमुखके रणमेंरदतोरौं ९७ अति कोपसों रोप्यो है पाउँसभा सब लंक सशंकितशोरमचा। तमके घननादसे बीर प्रचारिकै हारि निशाचर सैनपचा॥ न टरै पगमेरुहिते गरुभो सो मनोमहि संग बिरंचिरचा॥तुलसी सब शूर सराहतहैं जगमें बलशालिहै बालिबचा ९८ ॥ घनाक्षरी ॥ रोप्योपावँपैजके बिचारिरघुबीर बल लागेभट सिमिटि न नेकु टसकतुहै। तजिधीरधरण धरणिधर धमकत धराधर धीरभार सहि न सकतुहै ॥ महाबलीबालिकोदबत दलकतभूमि तुलसीउछलिसिंधु मेरु मसकतु है । कमठ कपीनपीठ घंटापरो मन्दर को सोई आयो कामपै करेजो कसकतुहै ९९॥ झूलना॥कनक गिरिश्रृंगचढ़ि देखि मर्कटकटक बदति मन्दोदरी परम भीता । सहस्रभुज मत्तगजराज नरकेशरी परशुधर गर्व जेहि देखिबीता ॥ दासतुलसी समर सबल कोशलधनी ख्यालहीं बालि बलशालिजीता। रेकन्त तृणदन्त गहि शरण श्रीरामकहि अजहुं यहिभांतिलैसौंपुसीता १०० रेनीचमारीच बिचलाइ हतिताड़का भंजि शिवचाप सुख सबहिं दीन्ह्यो । सहसदशचारि खल सहित खर दूषणहि पठै यमधामतें तउन चीन्ह्यो ॥ मैं जो कहों कन्तसुनु मन्त भगवन्त सो बिमुखह्वै बालिफलकौन लीन्ह्यो । बीसभुजशीशदशखीशगयेतबहिं जब ईश के ईशसों बैर कीन्ह्यो १ बालि दलि कालि जलयान पाषाण किये कंत भगवंत तें तउन चीन्हे। बिपुल बिकराल भटभालकपि

काल से संगतरु तुंगगिरि शृंगलीन्हे ॥ आइगे कोश-
लाधीश तुलसीश जेहि छत्रशशिमौलि दशदूरिकीन्हे ।
ईशचकशीश जनिखीशकरु ईशसुनु अजहुँ कुलकुशल
बैदेहिदीन्हे २ जाकेसैन सम्मूहकपि कौनगनै अर्बुदे म-
हाबलि बीरहनुमान जानी । भूलिहैं दशदिशाशीशपुनि
डोलिहैं कोपि रघुनाथ जब बानतानी ॥ बालिहोंगर्ब जिय
माहँ ऐसीकियो मारिदहपट्टकियोयमकीधानी॥कहतमंदो-
दरी सुनहिं रावणमतो बेगि लैदेहि बैदेहिरानी ३ गहन
उजारि पुरजारि सुतमारि तव कुशल गो कीश बरबैरि
जाको। दूसरो दूत प्रणरोपि कोप्यो सभा खर्ब कियो सर्ब
को गर्बथाको ॥ दास तुलसी सभय बदति मयनंदिनी
मंदमति कंतसुनु मंतहृयांको । तौलौं मिलुबेगिनहिं जौ-
लौं रणरोष भयो दाशरथिबीर बिरुदैत बांको ४ ॥ घना-
क्षरी ॥ कानन उजारि अक्षमारि धारि धूरि कीन्ही नगर
प्रचार्यो सो बिलोक्यो बलकीशको । तुम्हैं बिद्यमान
यातुधान मंडलीमें कपि कोपि रोप्यो पावँसो प्रभाव तु-
लसीशको॥ कंतसुनु मंत कुल अंतकिये अंतहानि हाय
तातकीजै हिय भरोसा भुजबीशको । तौलौं मिलुबेगि
जौलौं चापना चढ़ायो राम रोषि बाण काढ़्योना दलैया
दशशीशको ५ पवनको पूत देख्यो दूतबीर बांकुरो जो
बंक गढ़लंकसों ढाकाढकेलि ढाहिगो । बालि बलशा-
लिकोसो कालिदाप दलिकोपि रोप्यो पाउँ चपरि चमू
को चाउचाहिगो ॥ सोइ रघुनाथ कपिसाथ पाथनाथ बां-
धि आयो नाथ भागेते खिरिरखेह खाहिगो । तुलसी
गरब तजि मिलिबेको साजसाजि देहिसिय नतोपिय

पायमाल जाहिगो ६ उदधिअपारउतरतहूंनलागी बार केशरीकुमार सो अदंड कैसो डांड़िगो । बाटिकाउजारि अक्ष रक्षकनि मारि भट भारी भारी रावरे को चाउरसो कांड़िगो ॥ तुलसी तिहारे बिद्यमान युवराज आज कोपि पाउँरोप्योसब छूंछेकैके छांड़िगो । कहेकीनलाज पियअ-जहूंन आवेबाज सहितसमाज गढ़रांड़ कैसो भांड़िगो ७ जाके रोषदुसह त्रिदोष दाहदूरिकीन्हें पैयत न क्षत्री खोज खोजत खलकमें । महिषमतीको नाहु साहसी सहसबाहु समर समर्थनाथ हेरिये हलकमें ॥ सहित समाज महाराजसो जहाजराज बूड़िगयो जाके बल बारिधि छलकमें । टूटत पिनाक के मनाक बाम रामसेते नाक बिनुभये भृगुनायक पलकमें ८ कीन्ही क्षोणी क्षत्री बिनु क्षोणिप छपनहार कठिन कुठार पाणि बीरवान जानिकै । परम कृपाल जो नृपाल लोकपालन पै जबधनुहाई ह्वैहै मन अनुमानिकै ॥ नाकमें पिनाक मिसि बामता बिलोकिराम रोक्यो परलोक लोकभारी भ्रम मानिकै । नाइ दशमाथ महिजोरि बीशहाथ पिय मिलिये पै नाथ रघुनाथ पहिंचानिकै ९ कह्योमतमातुल बिभीषणहुंबारबार अंचल पसारि पियपांय लैलैहौंपरी । बिदित बिदेहपुर नाथ भृगुनाथ गति समय सयानी कीन्ही जैसी आइ गौंपरी ॥ बायस बिराधखरदूषण कबंध बालि बैररघुबीर केनपूरीकाहू कोपरी । कंतबीशलोचन बिलोकिये कुमंत फल ख्याल लंकलाई कपिरांड़कीसी झोपरी १० ॥ सवैया ॥ रामसोंशामकियेनितहै हितकोमलकाजन कीजिय ठाढ़े । आपनि सूझिकहौं पियबूझिये जूझिबे योग्नठा-

हरुनाढ़े॥नाथसुनीभृगुनाथकथा बलिबालिगयेचलिबातकेसाढ़े। भाइबिभीषणजाइमिल्यो प्रभुआइपरेसुनिसापरकाढ़े ११ पालिबेको कपिभालुचमू यमकालकरालहु कोपहरी है। लंकसेबंक महागढ़दुर्गम ढाहिबे दाहिबेको कहरीहै॥ तीतरतोम तमीचरसैन समीर को सूनु बड़ो बहरीहै। नाथ भलो रघुनाथ मिलो रजनीचरसैन हिये हहरीहै १२॥घनाक्षरी॥ रोषेरणरावण बोलायेबीरबानइत जानत जे रीति सबसंयुग समाजकी। चली चतुरंग चमूचपरि हने निशान सेना सराहनयोग रातिचरराज की॥ तुलसी बिलोकि कपिभालु किलकत ललकत लखि ज्यों कंगाल पातरी सुनाजकी। रामरुख निरखिहरषिहियहनुमान मानोखेलकर खोलीशीश ताजबाजकी १३ साजिकै सनाह गजगाहसे उछाहदल महाबलीधाये बीर यातुधान धीरके। इहां भालु बंदर बिशाल मेरु मंदरमें लिय शैल सालतोरि नीरनिधि तीरके॥ तुलसी तमकि तकि भिरेभारी युद्धक्रुद्ध सेनपसराहे निज निज भटभीरके। रुंडनकेभुंड भूमिझूमि नाचैं भुकरसे सभर सुमारशूर मारे रघुबीरके १४॥ सवैया॥ तीखे तुरंग कुरंग सुरंगनि साजिचढ़ेछटि छैलछबीले। भारी गुमान जिन्हें मन में कबहूं न भये रणमें तनुढीले॥ तुलसीलखिकेहरि केहरिके झपटे पटकेसेसशूरसलीले। भूमिपरे भट घूमि कराहत हांकिहने हनुमानहठीले १५ शूरसयी पलसाजिसुबाजि सुशेलधरे बगमेल चलेहैं। भागेभुजा भरि भारी शरीरबली बिजयी सबभांतिभलेहैं॥ तुलसी जिन्हेंधाइधुके धरणी धरणीधरघोर धकानहलेहैं। तेरण

तिच्छन तच्छन लाखन दानिज्यों दारिद दाबि दले हैं १६ गहिमंदरबंदर भालुचले सोमनो उनये घनसावन कें। तुलसी उतझुंड प्रचंडझुके झपटे भटजे सुरदावन के॥ बिरुझेबिरुदैतजेखेतअरे नटरेहठि बैरबढ़ावनके। रणमारुमची उपरी उपरा भलेबीर रघूपति रावणके १७ शरतोमरशैलसमूह पवांरत मारतबीर निशाचरके।इतते तरुमाल तमाल चले खरखण्ड प्रचण्ड महीधरके ॥ तुलसी करिकै हरिनादभिरे भटखग्गखगे खपुआ खर- केनखदंतनसों भुजदण्ड बिहण्डत मुंडसों मुंड परेझर के १८ रजनीचर मत्त गयंदघटा बिघटे मृगराजके साजलरै। झपटै भटकोटि महीपटकै गरजै रघुबीरकी सौंहकरै॥ तुलसी उत हांक दशाननदेत अचेतभे बीर को धीरधरै। बिरुझो रनमारुतको बिरुदैत जो कालइ काल सो बूझि परै १९ जेरजनीचर बीर बिशाल कराल बिलोकत कालनखाये। तेरणरोर कपीश किशोर बड़े बरजोर परे फँगपाये॥ लूमलपेटि अकाश निहारिकै हांकिहठी हनुमान चलाये। सूखिगेगात चले नभजात परेभ्रमबात न भूतल आये २० जो दशशीश महीधर ईशको बीसभुजा खुलि खेल निहारो। लोकप दिग्गज दानवदेव सबै सहमे सुनिसाहस भारो॥ बीरबड़ोबिरु- दैत बली अजहूं जगगावत जासुपवांरो। सो हनुमान हन्योमुठिका गिरिगो गिरिराजज्यों गाजको मारो २१ दुर्गम दुर्गपहारतेभारे प्रचंडमहा भुजदंडबनेहैं।लरूयमें परूय रतिरूयनतेजसे शूरसमाजमें गाजगनेहैं॥ तेबिरु- दैत बली रणबांकुरे हांकि हठी हनुमान हनेहैं। नामलै

रामदेखावतबंधुको घूमतघायल घाय घनेहैं २२॥ घना-
क्षरी ॥ हाथिनसों हाथीमारे घोरेघोरे सोंसंहारे रथनसोंरथ
बिदरन बलवानकी। चंचल चपेटचोटचरण चकोटचाहे
हहरानीफ़ोजें भहरानी यातुधानकी॥ बारबारसेवकसराह
नाकरतराम तुलसी सराहै रीति साहेब सुजानकी।लांबी
लूमलसत लपेटिपटकतभट देखोदेखो लषण लरनि ह-
नुमानकी २३ दबकि दबारे एकबारिधिमें बोरेएक मगन
महीमें एकगगनउड़ातहै।पकरिपछारे इकचरणउखारे
एकचीर फारिडारे एकमींजिमारेलातहै ॥ तुलसीलषण
राम रावण बिबुधबिधि चक्रपाणि चण्डिपति चण्डिका
सिहातहै। बड़े बड़े बानइत बीर बलवानबड़े यातुधान
यूथपति पाते बात जातहै २४ प्रबल प्रचण्ड बरिबण्ड
बाहुदण्ड बीर धाये यातुधान हनुमान लियो घेरिकै।
महाभुजदण्ड कुंजरारि ज्यों गरजिभट जहांतहां पटके
लंगूर फेरि फेरिकै॥ मारेलात तोरेगात भागेजात हा
हाखात कहै तुलसी सराखि रामकी सों टेरिकै। ठहर
ठहर परे कहर कहर उठै हहर हहर हर सिद्ध हँसेहेरि
कै २५ जाकी बांकी बीरता सुनत सहमत शूर जाकी
आंच अजहूं लसत लंक लाहसी। सोइहनुमानबलवान
बांको बानइत जेहैं यातुधान सेना चले लेत थाहसी॥
कंपत अकंपन सुखाय अतिकायकाय कुंभउकरणआइ
रह्यो पाइ आहसी। देखे गजराज मृगराज ज्योंगरजि
धायो बीर रघुबीरको समीरसूनु साहसी २६ ॥झूलना॥
मत्त भट मुकुट दशकण्ठ साहस शैल शृंग बिद्दरनजनु
बज्रटांकी। दशन धरिधरणि चिक्करत दिग्गजकमठ शेष

संकुचित शंकितपिनाकी ॥ चलतमहिमेरु उच्छलतसा-
गर सकल बिकल बिधि बधिरदिशि बिदिशि झांकी ।
रजनिचर घरनिघर गर्भ अर्भक स्रवत सुनत हनुमान
की हांकबांकी २७ कौनकी हांकपर चौंकि चंडीशबिधि
चण्डकर थकित फिरि तुरँगहांके।कौनके तेज बलसीम
भट भीमसे भीमता निरखिकरि नयनढांके ॥ दासतु-
लसीशके बिरद बरणत बिदुष बीर बिरुदैत बर बैरि
धाके। नाक नरलोक पाताल कोउ कहत किन कहां
हनुमानसे बीर बांके २८ यातुधानावली मत्त कुंजरघटा
निरखि गजराज मानों गिरिते टूट्यो । बिकट चटकन
चोट चरण गहि पटकि महि निघटि गये सुभट सतसब
कोछूट्यो ॥ दास तुलसी परत धरणि धरकत झुकत
हाटसी उठत जंबुकनि लूट्यो । धीर रघुबीरके बीररण
बांकुरे हांकि हनुमान कुलि कटककूट्यो २९ ॥ छप्पय॥
कतहुं बिटपभूधर उपारि अरिसैन बरष्षत । कतहुँ
बाजिसों बाजि मर्दि गजराज करष्षत ॥ चरण चोट
चटकन चकोट अरि उर शिर बज्जत । बिकट कटक
बिद्दरत बीर बारिद जिमि गर्जत ॥ लंगूरलपेटत पटकि
महि जयति राम जय उच्चरत । तुलसीश पवननंदन
अटल युद्धक्रुद्ध कौतुककरत ३० ॥ घनाक्षरी॥ अंगअंग
दलित ललितफूले किंशुकसे हने भट लाखन लषणया-
तुधानके।मारिकै पछारिकै उपारि भुजदण्ड चण्ड खण्ड
खण्ड डारेते बिदारि हनुमानके ॥ कूदत कबंधके कदंब
बंबसी करत धावत देखावतहै लाघौराघौ बानके । तु-
लसी महेश बिधि लोकपाल देवगण देखत बेवानचढ़े

कौतुक मशानके ३१ लोथिनसों लोहूके प्रवाह चले जहां तहां मानहुँ गिरिन्ह गेरु झरना झरतु हैं। शोणित भरत घोर कुंजर करारे भारे कूलते समूल बाजि बिटप परतुहैं॥ सुभट शरीर नीर चारी भारी भारीतहँ शूरन उछाह क्रूर कादर डरतुहैं। फेकरि फेकरि फेरु फारि फारि पेटखात काककंक बालक कोलाहल करतुहैं ३२ ओझरीय झोरी कांधे आंतनकी सेल्हीबांधे मुण्डके कमण्डल खपर किये कोरिकै। योगिनी जमाति जोरिझुंड बनी तापससे नीरतीर बैठीसो समर खोरि खोरिकै॥ शोणितसों सानिसानि गूदाखातसतुआसे एकप्रेतपियतबहोरि घोरिघोरिकै। तुलसी बैताल भूत साथ लिये भूतनाथ हेरिहेरिहँसतहैं हाथजोरिजोरिकै ३३॥सवैया॥ रामशरासनते चले तीर रहे न शरीर हड़ावरि फूटी। रावण धीर न पीर गनी लखिलैकर खप्पर योगिनि जूटी॥ शोणित छीट छटानिछुटी तुलसी प्रभु सोहैंमहा छबि छूटी। मानौं मरक्कत शैल बिशालमें फैलिचलीबर बीर बहूटी ३४॥ घनाक्षरी॥ मानो मेघनादसों प्रचारि भिरेभारी भट आपने आपने पुरुषारथ न ढीलकी। घायल लषणलाल सुनि बिलखानेराम भई आशशिथिल जगन्निवास डीलकी॥ भाईको न मोह छोह सीयको न तुलसीश कहैं मैं विभीषणकी कछु न सबीलकी। लाज बांह बोल की नेवाज की सँभार मार साहब न राम से बलाइ लेउँ भीलकी ३५॥सवैया॥कानन बास दशानन सो रिपु आननश्री शशिजीति लियोहै। बालि महाबल शालि दल्यो कपिपालि बिभीषणभूप कियोहै॥ तीय

हरी रण बंधु पस्यो पै भस्यो शरणागत शोच हियो है ।
बांह पगार कृपालु उदार कहां रघुबीरसों बीर बियो है
३६ लीन्ह उखारिपहार बिसार चल्यो तेहिकाल बिलंब
न लायो । मारुतनंदन मारुतको मनको खगराजको
बेग लजायो ॥ तीखे तुरा तुलसी कह तोपैं हिये उपमा
को समाउ न आयो । मानो प्रत्यक्ष परब्बत कीन भली
कलसीकपियोंधुकिधायो ३७॥घनाक्षरी॥चल्यो हनुमान
सुनि यातुधान कालनेमि पठयो सो मुनि भयो पायो
फल छलिकै । सहसा उखारो है पहार बहु योजन को
रखवारे मारे भारे भूरि भट दलिकै ॥ बेगिबल साहस
सराहत कृपालु राम भरतकी कुशल अचल ल्यायो
चलिकै । हाथ हरिनाथ के बिकाने रघुनाथ जन शील
सिंधु तुलसीश भलो मानो भलिकै ३८ बाप दियो कानन
भो आनन सुभानन सों बैरी भो दशानन सों तीय को
हरण भो । घोर रारि हेरि त्रिपुरारि विधि हारेहिय घा-
यल लषणबीर बानरबरणभो ॥ बालि बल शालि दलि
पालि कपिराजकै बिभीषण नेवाजिसेतसागर तरणभो ।
ऐसे शोकमें तिलोकके बिशोक पलहीमें सबहीके तुलसी
के साहेब शरणभो ३९ ॥सवैया॥ कुंभकरन्नहन्योरणराम
दल्यो दशकंधर कंधरतोरे । पूषणबंश बिभूषण पूषण
तेज प्रताप गरेअरि ओरे ॥ देवनिशान बजावत गावत
सावत गोमन भावत भोरे । नाचत बानरभालु सबै
तुलसी कहिहारे हहाभयहोरे ४० ॥ घनाक्षरी ॥ मारेरण
रातिचर रावण सकुलदल अनुकूल देव मुनिफूलबर-
षतुहै । नाग नर किन्नर बिरंचिहारिहर हेरि पुलकशरीर

हियेहेतु हरषतु है ॥ बामश्रोर जानकी कृपानिधान के बिराजै देखत बिषाद मिटै मोद सरसतु है। आयसुभो लोकनि सिधारे लोकपाल सब तुलसी निहालकै कै दिये सरषतु है ४१ ॥

इतिश्रीलंकाकाण्ड सम्पूर्णम् ६ ॥

अथ उत्तरकाण्ड प्रारम्भः ॥ सवैया ॥ बालिसे बीर बिदारि सुकण्ठ थप्यो हरषे सुर बाजन बाजे। पलमें दल्योदाशरथी दशकन्धर लंक बिभीषण राजबिराजे ॥ राम सुभाउ सुने तुलसी हुलसे अलसी हमसे गल गाजे। कायर कूर कपूतन की हद तेउ गरीब नेवाजनेवाजे ४२ बेद पढ़ैं बिधि शम्भु सभीत पुजावन रावण सो नितआवैं। दानव देव दयावने दीन दुखी दिनदूरिहिते शिरनावैं ॥ ऐसेउ भागभगे दशभालते जो प्रभुता कबिकोबिद गावैं। रामसबाम भये त्यहि बामहिं बाम सबै सुखसंपति लावैं ४३ वेदबिरुद्ध मही मुनिसाधु सशोक कियो सुरलोक उजारयो। और कहा कहौंतीय हरी तबहूं करुणाकरि कोप निवारयो ॥ सेवक छोहते छांडीक्षमा तुलसी लख्यो रामसुभाउ तिहारयो। तौलों न दापदल्यो दशकंधर जौलों बिभीषण लातन मारयो ४४ शोकसमुद्र निमज्जत काढ़ि कपीश कियो जगजानत जैसो। नीच निशाचर बैरीको बंधु बिभीषण कीन्ह पुरंदर सैसो ॥ नामलिये अपनाइ लिया तुलसी सो कहै जगकौन अनैसो। आरत आरति भंजन राम गरीब नेवाज न दूसर ऐसो ४५ मीतपुनीत किये कपि भालुको पाले जो काहू न बाल तनू जो। सज्जन सीव बिभीषणभो

भजहू बिलसै बरबंधुबधूजो ॥ कोशलपाल बिना तुल-
सी शरणागतपाल कृपाल न दूजो। कूरकुजाति कपूत
अघी सबकी सुधरै जोकरै नरपूजो ४६ तीय शिरोमणि
सीय तजी ज्यहि पावककी कलुषाई दहीहै। धर्मधुरन्धर
बंधुतज्यो पुरलोगनकी बिधि बोलिकहीहै ॥ कीशनिशा-
चर की करणी न सुनी न बिलोकि न चित्त रहीहै। राम
सदा शरणागतकी अनखोही अनैसी सुभायसहीहै ४७
अपराध अगाधपरे जनते अपनेउर आनत नाहिंनजू।
गणिका गज गीध अजामिल के गनि पातकपुंज सेरा-
हिंनजू ॥ लिये बारकनाम सो धामदियो ज्यहिधाममहा-
मुनिजाहिंनजू। तुलसीभजु दीनदयालहिरे रघुनाथअ-
नाथहि दाहिनजू ४८ प्रभुसत्यकरी प्रह्लादगिरा प्रकटे
नरकेहरि खम्भमहां। झषराजग्रस्यो गजराजकृपा तत-
काल बिलम्बकिये न तहां ॥ सुरसाखीदैराखीहै पांडुबधू
पटलूटत कोटिनभूप जहां। तुलसी भजु शोचबिमोचन
को जनकोप्रण राम न राख्योकहां ४९ नरनारिउघारि
सभामहँहोत दिये पटशोचहरयोमनको। प्रह्लादबिषा-
द निवारण वारण तारण मीत अकारनको ॥ जोकहावत
दीनदयाल सही त्यहि भार सदा अपने पनको। तुलसी
तजि आन भरोस भजै भगवान भलो करि है जन
को ५० ऋषिनारि उधारि कियो शठ केवट मीत पुनी-
त सुकीर्तिलही। निजलोकदयो शवरी खगको कपि थां-
पि सो मालुम है सबही ॥ दशशीश विरोध सभीत
बिभीषण भूप कियो जगलीक रही। करुणानिधि को
भजुरे तुलसी रघुनाथ अनाथके नाथसही ५१ कौशिक

बिप्रबधू मिथिलाधिपके सब शोचदले पलमाहिं। बालि दशानन बंधु कथा सुनि शत्रु सुसाहिब शील सराहैं॥ ऐसी अनूपकहे तुलसी रघुनायककी अगुणी गुणगाहैं। आरत दीन अनाथनको रघुनाथ करे निजहाथन छाहैं ५२ तेरेबेसाहे बेसाहत औरनि और बेसाहिके बेंचनहारे। ब्योम रसातल भूमि भरे नृप कूर कुसाहिब से तिहुँखारे॥ तुलसी तेहि सेवत कौन मरे रजते लघुको करे मेरुतेभारे। स्वामि सुशील समर्थ सुजान सोतोसों तुही दशरत्थ दुलारे ५३॥ घनाक्षरी॥ यातुधानभालु कपि केवट बिहंगजोजो पालेनाथ सद्यसो भयो सोकाम काजको। आरत अनाथ दीन मलिन शरणआये राखे सनमानि सो स्वभाव महाराजको॥ नाम तुलसीपैभोड़े भाग्यते कहायो दास किये अंगीकार ऐसे बड़े दगाबाज को। साहबसमर्थ दशरत्थके दयालदेव दूसरो न तोसों तुही आपनेकीलाजको ५४ महाबलीबालि दलि कायर सुकंठ कपिराज किये महाराज हीन काहूकामको। आत घात पातकी निशाचर शरणआये किये अंगीकारनाथ येते बड़े बामको॥ राय दशरत्थके समर्थ तेरेनामलिये तुलसीसे कूरको कहत जग रामको। आपनेनेवाजे की तोलाज महाराजको सुभाव समुझत मनमुदित गुलाम को ५५ रूप शीलसिंधु गुणसिंधु बंधुदीन को दयानिधान जान शनि बीरबाहु बोलको। श्राद्धकियो गीध को सराहे फल शवरी के शिलाशाप शमन निबाह्यो नेह कोलको॥ तुलसीउरोउ होत रामको स्वभाव सुनि को न बलिजाइ न बिकाइ बिनमोलको। ऐसेहुसुसाहब

के जाको अनुरागनसो बड़ेइ अभागो भाग भागे लोभ
लोलको ५६ शूरशिरताज महाराजनके महाराज जाको
नामलेतही सुखेतहोत ऊसरो। साहिब कहां जहांनजा-
नकीश सों सुजान सुमिरेकृपालके मरालहोत खूसरो ॥
केवट पषान यातुधान कपिभालु तारे अपनायो तुलसी
सो धींगधमधूसरो। बोल को अटलबाहँ कोपगारदीन-
बंधु दूबरेको दानिको दयानिधान दूसरो ५७ कीबेको
बिशोक लोक लोकपालहूते सब कहूंकोउभयो चरवाहो
कपि भालुको। पविकोपहारकियो ख्यालहीकृपालराम
बापुरो बिभीषण घरौंधाहोतबालको ॥ नामओट लेतही
निखोट होत खोटै राल चोट बिन मोटपाइ भयो न
निहालको। तुलसीकीबार बलि ढीलहोत शीलसिंधु
बिगरी सुधारिबे को दूसरो दयालको ५८ नामलिये
पूतको पुनीतकिये पातकी सुआरति नेवारी प्रभु पाहि
कहे पीलकी। छलनकी छौंड़ीसी निगोरी छोरीजाति
पांति कीन्हीं लीन आपमें भामिनी भोड़ी भीलकी ॥
तुलसीओ तारबो बिसारबो न अंतमोहूं नीकेहै प्रतीति
रावरे स्वभाव शीलकी। देवतो दयानिकेत देतदादि
दीननकी मेरीबार मेरिही अभाग नाथ ढीलकी ५९
आगे परे पाहन कृपा किरात कोलनि कपीश निशिचर
अपनाय नाय माथजू। सांची सेवकाई हनुमानकी सु-
जानराय ऋणिया कहायोहै बिकाने ताके हाथजू ॥
तुलसी से खोटे खरे होत ओटनामही की महँगी मा-
टीमगहूंकी मृगमदसाथजू। बातचले बातको न मानिबो
बिलगबलि काकीसेवा रीझिकै नेवाजे रघुनाथजू ६०

कौशिक की चलती पषानकी परस पाई टूटतधनुष बनि गईहै जनककी। कोलभीलशवरी बिहंगभालु रातिचर रतिनके लालचिन प्रापति मनककी॥ कोटिकला कुशल कृपालतन पालतन बातहूं कितेक तृण तुलसी तनककी। राय दशरत्थ के समर्थ राम राजमणि तेरे हेरेलोपै लिपि बिधिहूं गनककी ६१ शिलाशाप पाप गुह गीधको मिलाप शवरीके बाप आप चलि गयेहौ सो सुनीमें। सेवक सराहे कपिनायक बिभीषण भरत सभा सादर सनेह सुर धुनी में॥ आलसी अभागी अघी आरत अनाथपाल साहब समर्थ एक नीकेमनं गुनी में। दोषदुख दारिद दलैया दीनबंधु राम तुलसी न दूसरो दयानिधान दुनीमें ६२ मीतबालिबंधुपूतदूत दशकंधबंधु सचिवसराधसाध शवरी जटाइको। लंक जरीजोहै जियशोचसो बिभीषणको कहौ ऐसे साहबकी सेवा न खटाइको॥ बड़े यकयकते अनेकलोक लोकनाथ अपने अपने कीतो कहैगो घटाइको। सांकरेको सेइबो सराहिबे सुमिरिबेको रामसों न साहब न कुमति कटाइको ६३ भूमिपाल ब्यालपाल लोकपाल नाकपाल कारणकृपालसें सबैके जीकी थाहली। कादरको आदर काहूके नाहींदेखियत सबनसोहातहै सेवासुजानटाहली॥ तुलसी सुभायकहै नहींकछु पक्षपात कौनेईश कियेकीश भालु खासमाहली। रामही के द्वारे पै बुलाइसनमानियत मोसे दीन दूबरे कपूतकूरकाहली ६४ सेवाअनरूप फलदेत भूप भृत्युज्यों बिहीने गुण पथिक पियासे जात पथके। लेखे जोखेचोखेंचित तुलसी स्वारथ हित

नीके देखे देवता देवैया गुण गथके ॥ गीध मानो गुरु कपि भालु मानो मीतके पुनीत गीतसाके सबसाहब समर्थके । औरभूप परखि सुलखि तौलि साईलेत लसम के खसम तुहीपै दशरथके ६५ रीति महाराजकी निवाजिये जोमांगनो सोदोष दुख दारिद दरिद्रकैके छोड़िये। नामजाको कामतरु देत फलचारि ताहि तुलसीबिहाइ कै बबूररेंड़ गोड़िये ॥ यांचैको नरेशदेशदेशको कलेश करैं देहैं तो प्रसन्न ह्वै बड़ीबड़ाइ बोड़िये । कृपापाथ नाथ लोकनाथ नाथ सीतानाथ तजि रघुनाथ हाथऔर काहि ओड़िये ६६॥सवैया ॥ जाकेबिलोकते लोकपहोत बिशोक लहैं सुरलोक सुठौरहि । सोकमला तजि चंचलता अरु कोटिकला रिझवे शिरमौरहिं ॥ ताकोकहाइ कहै तुलसी तू लजाहि न मांगतकूकुरकोरहि । जानकी जीवनको जनह्वै जरिजाउ सो जीह जो यांचत औरहि ६७ जड़ पंचमिलै जेहि देहकरी करनी देखुधौं धरनीधरकी । जनकी कहु क्यों करिहै न सँभार जोसार करै सचराचरकी ॥ तुलसी कहु राम समानको आनहै सेवकि जासु रमा घरकी । जगमें गति जाहि जगत्पतिकी परवाहि सो ताहि कहा नरकी ६८ जग यांचिय कोउन यांचियजो जिय यांचिय जानकि जानहिरे । जेहियांचत यांचकता जरि जाइ जो जोरत जोर जहानहिरे ॥ गति देखु बिचारि बिभीषणकी अरु आनि हिये हनुमानहिरे । तुलसी भजु दारिद दोष दवानल संकट कोटि कृपानहिरे ६९ सुनु कान दिये नित नेम लिये रघुनाथहिके गुणगाथहिरे । सुख मंदिर सुंदर रूप

सदा उर आनि धरै धनु भाथहिरे ॥ रसना निशि बा-
सर सादर सोतुलसी जपु जानकी नाथहिरे। करु संग
सुशील सुसंतन सों तजि कूर कुपंथ कुसाथहिरे ७०
सुतदार अगार सखापरिवार बिलोकु महा कुसमाजहि
रे । सबकी ममता तजिकै समता सजि सन्तसभा न
बिराजहिरे ॥ नरदेह कहा करिदेखु बिचार गँवार बि-
गारन काजहिरे। जनि डोलहि लोलुपकूकुर ज्यों तुलसी
भजुकोशलराजहिरे ७१ बिषया परनारि निशातरुणाइ
सो पाइ परयो अनुरागहिरे। यमके पहरू दुख रोग
बियोग बिलोकतहूं न बिरागहिरे ॥ ममता बशते सब
भूलिगयो भयो भोर महाभय भागहिरे । जरठाई दशा
रबिकालउयो अजहूं जड़जीव न जागहिरे ७२ जनम्यों
जेहियोनि अनेक क्रिया सुख लागि करी न परे बरणी ।
जननी जनकादि हितू भये भूरि बहारि भई उरकी जर-
णी ॥ तुलसी अबरामको दास कहाय हिये धरु चातक
की धरणी । करि हंसको वेष बड़ो सबते तजि दे बक
बायसकी करणी ७३ भलि भारत भूमि भले कुलजन्म
समाज शरीर भलो लहिकै। ममताकरषा तजिकैबरषा
हिम मारुत घाम सदासहिकै ॥ जोभजै भगवानसयान
सोई तुलसी हठ चातक ज्यों गहिकै। न तो और सबै
बिष बीजबये हर हाटक कामधुका नहिकै ७४ सो सु-
कृती शुचिमंत्र सुसंत सुजान सुशील शिरोमणिस्वै।सुर
तीरथ तासु मनावत आवत पाप न होत है तातनछ्वै ॥
गुण गेह सनेहको भाजनसो सबहीसों उठाइकहौं भुज
द्वै। मति भाव सदा छल छांड़ि सबै तुलसी जो रहै

रघुबीर को कै ७५ सो जननी सो पिता सोइ भ्रात सो भामिनि सो सुतसो हितमेरो । सोई सगो सोसखासोइ सेवकसो गुरु सोसुरसाहिबचेरो ॥ सो तुलसीप्रियप्राण समान कहां लौं बनाइ कहौं बहुतेरो । जो तजिदेह को गेहको नेह सनेह सो रामको होइ सबेरो ७६ राम हैं मातु पिता सुत बंधु औसंगी सखा गुरु स्वामि सनेही। राम कि सौंह भरोसो है रामको रामरँगी रुचिराचो न केही ॥ जीवतराम मुयेपुनि राम सदा रघुनाथहि की गतिजेही । सोईजिये जगमें तुलसी नतडोलत और मुये धरदेही ७७ सियराम स्वरूप अगाध अनूपबिलोचन मीननको जलुहै । श्रुति रामकथा मुखरामकोनाम हिये पुनि रामहिको थलुहै ॥ मतिरामहि सों गतिरामहिसों रतिरामसों रामहिको बलुहै । सबकी न कहै तुलसी के मते यतनो जगजीवनको फलुहै ७८ दशरत्थ के दानि शिरोमणि राम पुराण प्रसिद्ध सुन्यो यशमें । नर नाग सुरासुर याचकजो तुमसों मनभावत पावन में ॥ तुलसी करजोरि करै बिनती जो कृपाकरि दीनदयाल सुने। जेहिदेहसनेह न रावरेसों ऐसीदेहधराइकै काहजने ७९ झूठोहै झूठोहै झूठोसदा जग सन्त कहन्त जेअंतलहाहै । ताकोसहै शठसंकट कोटिक काढ़तदन्तकरन्त हहाहै ॥ जानपनीको गुमानबड़ो तुलसीके बिचार गँवार महाहै । जानकी जीवन जानन जान्यो तो जान कहावत जान कहाहै ८० तिनते खर शूकर श्वान भले जड़ता बशतेन कहैं कछुवै । तुलसी जेहिरामसों नेहनहीं सो सहीबिनु पूंछ बिषाननहै ॥ जननी कतभारमुई दशमास

भई किन बांभ गई किनच्वै । जरिजावसो जीवनजान-
किनाथ जिये जगमें तुम्हरो बिनुके ८१ गजबाजिघटा
भले भूरिभटा बनिता सुत भौंहतकै सबकै । धरणीधन
धाम शरीर भलो सुरलोकहुं चाहियहै सुखरवै ॥ सब
फोटक साटकहै तुलसी अपनो न कछू स्वपनो दिनद्वै ।
जरिजाउ सो जीवन जानकिनाथ जिये जग में तुम्हरो
बिनुकै ८२ सुरराजसों राजसमाज समृद्धि बिरंचिधना-
धिपसो धनभो । भवमानसों पावकसों यम सोमसोंपूषन
सों भव भूषनभो ॥ करियोगसमाधि समीरन साधिकै
धीर बड़ो बशहूंमनभो । सबजाय सुभाय कहै तुलसी
जो न जानकी जीवनको जनभो ८३ कामसे रूप प्रताप
दिनेशसे सोमसे शील गणेशसे माने । हरिचंदसे सांचे
बड़े बिधिसे मघवासे महीप बिषय सुखसाने ॥ शुकसे
मुनिशारद सेवकता चिरजीवन लोमशते अधिकाने ।
ऐसेभये तो कहा तुलसी जोपै राजिवलोचन रामनजा-
ने ८४ भूमत द्वारअनेक मतंग जँजीर जड़े मदअम्बु
चुचाते । तीषे तुरंग मनोगति चंचल पौनके गौनहुते
बढ़िजाते ॥ भीतर चंद्रमुखी अवलोकति बाहर भूपखड़े
नसमाते । ऐसे भयेतौ कहातुलसी जोपै जानकिनाथके
रंगनराते ८५ राजसुरेश पचाशकको विधिके करको
जो पटो लिखिपाये । पूत सपूत पुनीतप्रिया निजसुन्दर-
तारतिको मद नाये ॥ संपति सिद्धि सबै तुलसी मनकी
मनसा चितवै चितलाये । जानकि जीवन जाने बिना
जन ऐसेउ जीवन जीवित जाये ८६ कृशगात ललात
जो रोटिन को घरबात खरा खुरपा खरिया । तिनसोने

कै मेरु से ढेरलहो मनतो न भरयो घरपै भरिया ॥ तुलसी दुखदूनो दशा दुहुँदेखि कियो मुख दारिद को करिया । तजि आशभो दास रघूपति के दशरत्थ के दानि दयादरिया ८७ कोभरिहै हरिकेरितये रितवै पुनि कोहरि जो भरिहै । उथपै तेहिको जेहि रामथपै थपिहै तेहिको हरि जोटरिहै ॥ तुलसी यह जानि हिये अपने स्वपने नहिं कालहुसे डरिहै । कुमया कछुहानि न औरन की जोपै जानकीनाथ कृपा करिहै ८८ ब्याल कराल महाबिष पावक मत्त गयंदन के रद तोरे । शासतिशंक चली डरपै हुते किंकरते करणी मुखमोरे ॥ नेकु बिषाद नहीं प्रहलादहि कारणके हरि केवल होरे । कौनकी त्रासकरै तुलसी जोपै राखिहैं राम तौमारिहैं कोरे ८९ कृपा जेहिकी कछु काज नहीं न अकाज कछू जेहिके मुखमोरे । करै तिनकी परवाहिको जाहि बिषानन पूंछ फिरैदिनदोरे ॥ तुलसी जेहिके रघुबीरसे नाथ समर्थ सो सेवत रीझत थोरे । कहा भवभीर परी तेहिधौं बिचरै धरणी तिनसों तृणतोरे ९० कानन भूधर बारिबयारि महाबिष ब्याधि दवा अरिघेरे । संकट कोटि जहां तुलसी सुत मातपिता हित बंधुनमेरे ॥ राखिहैं रामकृपालु तहां हनुमानसे सेवकहैं जेहि केरे । नाकरसातल भूतलमें रघुनायक एकसहायक मेरे ९१ जबहीं यमराज रजायसुते मोहिं लै चलिहैं भट बांधि नटैया । तब तात न मात न स्वामि सखा सुत बन्धु बिशाल बिपत्ति बटैया ॥ शासति घोरपुकारत आरत कौनसुनै चहुँओरडटैया । एककृपालु तहां तुलसी दशरत्थ के नन्दन बन्दि कटैया ९२ जहां

यम यातन घोरनदी भटकोटि जलच्चर दंतटेवैया । जहँ धार भयंकर वार न पार न वोहितनाव न मीतखेवैया ॥ तुलसी जहँ मातु पिता न सखा नहिंकोऊ कहूँअवलंब देवैया । तहां बिनुकारण रामकृपालु बिशाल भुजागहि काढ़ि लेवैया ९३ जहां हितस्वामि न संगसखा बनिता सुत बंधु न बाप न मैया । काय गिरा मनके जनके अपराध सबै कुलकानि क्षमैया ॥ तुलसी त्यहिकालकृपालु बिना दुजो कौनहै दारुण दुःखदमैया । जहां सबसंकट दुर्घट शोच तहांमेरो साहिब राखै रमैया ९४ तापसको बरदायक देवसबै पुनिबैर बढ़ावत बाढ़े । थोरेही कोप कृपापुनि थोरेही बैठिकै जोरततोरतठाढ़े ॥ ठोंकिबजाइ लियो गजराज कहांलौंकहौं केहिसों रदकाढ़े । आरतके हित नाथ अनाथ के रामसहाय सही दिन गाढ़े ९५ जपयोग बिराग महामखसाधन दामदयादम कोटिकरै । मुनिसिद्ध सुरेश महेश गणेश से सेवत जन्म अनेक मरै ॥ निगमागम ज्ञानपुराणपढ़े तपसानलमें युगपुंज जरै । मनसों प्रण रोपिकहै तुलसी रघुनाथ बिनादुख कौनहरै ९६ पातकपीन कुदारिद दीन मलीनधरै कथरी करवाहै । लोककहै बिधिहू न लिख्यो स्वपनेहुनहीं अपनेवरवाहै ॥ रामको किंकरसो तुलसी समुझेहींभलो कहबो न रवाहै । ऐसोको ऐसो भयो कबहूं न भजे बिनु बानरको चरवाहै ९७ मातपिता जगजाय तज्यो बिधिहूंनलिख्यो कछुभालभलाई । नीचनिरादर भाजन कादर कूकुर टूकन लागिललाई ॥ राम स्वभाव सुन्यो तुलसी प्रभुसों कह्यो बारक पेट खलाई । स्वारथ को पर-

भारथको रघुनाथ सो साहिब खोरि न लाई ९८ पापहरे
परितापहरे तनु पूजिभो हीतल शीतलताई । हंसकियो
बकते बलिजाउँ कहांलौंकहौं करुणा अधिकाई ॥ काल
बिलोकि कहै तुलसी मनमें प्रभुकी परतीति अघाई ।
जन्म जहां तहँ रावरो सो निबहै भरिदेह सनेह सगाई
९९ लोककहै अरु हौंहूं कहूं जन खोटोखरो रघुनायक
हीको । रावरी राम बड़ी लघुता यशमेरो भयो सुख-
दायकहीको ॥ कै यह हानि सहौं बलिजाउँ कि मोहूं
करो निज लायकहीको । आनि हिये हित जानि करो
चाहो ध्यानधरो धनुशायकहीको १०० आपुहि आपु
को नीकेकै जानत रावरो रामब्रढ़ायो गढ़ायो । कीरज्यों
नामरटै तुलसी सोकहै जग जानकिनाथ पढ़ायो ॥ सोइ
है खेद जो वेदकहै न घटै जनजो रघुबीरबढ़ायो । हौंतौ
सदा खरको असवार तिहारेई नाम गयंद चढ़ायो १ ॥
घनाक्षरी ॥ क्षारते सँवारिकै पहारहूंते भारीकियो गारो
भयो पांचमें पुनीत पच्छ पाइकै । हौंतौ जैसोतब्र तैसो
अब अधमाइकैंकै भरों पेट राम रावरोई गुण गाइकै ॥
आपने निवाजे कीपै कीजैलाज महाराज मेरीओर हेरि
कै न बैठिये रिसाइकै । पालिकै कृपालब्याल बालको न
मारिये औ काटिये न नाथ बिषहूको रूख लाइकै २
वेद न पुरानगान जानौं ना बिज्ञानज्ञानध्यान धारनास-
माधि साधन प्रवीनता । नाहिंन बिरागयोग याग भोग
तुलसीके दया दान दूबरोहौं पापहीकी पीनता ॥ लोभ
मोह काम कोह दोषकोष मोसों कौन कलिहूं सिखिलाई
मेरी ऐ मलीनता । एकही भरोसोराम रावरो कहावतहौं

रावरो दयालु दीनबन्धु मेरी दीनता ३ रावरों कहावों गुणगावों राम रावरोई रोटी द्वैहों पावों राम रावरीहि कानिहों । जानत जहान मन मेरेहू गुमानबड़ो मानो मैं न दूसरो न मानत न मानिहों ॥ पांचकीप्रतीतिना भरोसोमोहिं आपनोई तुम अपनाइहौ तबहिं परिजानिहों । गढ़िगूढ़ि छीलिछालि कुंद कैसी भाई बातें जैसी मुख कहों तैसी जीय जब आनिहों ४ बचन बिकार बहुकरत खुवार मन बिगत बिचार कलिमलको निधानुहै । राम को कहाइ नाम बेचिबेचि खाइ सेवासंगति न जाइ पाछिले को उपखानुहै ॥ तेहू तुलसी को लोग भलीभला कहै ताको दूसरो न हेतु एक नीकेको निदानुहै । लोक रीति बिदित बिलोकियत जहां तहां स्वामि के सनेह श्वानहूको सनमानुहै ५ स्वारथको साजन समाज परमारथको मोसों दगाबाज दूसरो न जगजालहै । कै न आयकरों न करोंगो करतूति भली लिखी ना बिरंचिहू भलाई भूलिभालहै ॥ रावरी शपथ रामनामहींकी गति मेरे इहां झूठो झूठो सो त्रिलोक तिहुंकालहै । तुलसी को भलोपै तुम्हारेहीकिये कृपालु कीजै ना बिलम्बबलि पानीभरी खालहै ६ रागको न साज न बिराग योग याग जिय कायर न छांड़िदेत ठाटिबो कुठारको । मनोराज करत अकाज भयो आजुलगि चाहे चारुचीर पै लहै न टूकाठाटको ॥ कियो करतार बड़े क्रूरको कृपालु अति पायोनाम पारसहों लालची वराटको । तुलसीकी बाणी राम रावरे बनाई नतोधोबी कैसो कूकुर न घरको न घाट को ७ ऊँचोमन ऊँचीरुचिभागनीचो निपटहि लोकरीति

लायक न लंगर लवारहै। स्वारथ अगम परमारथकी कहा चली पेटकी कठिन जग जीवको जवारु है॥ चाकरी न आकरी न खेती न बनिज भीष जानत न कूर कछू किसिम कबारहै। तुलसीकी बाजी राखी रामहीके नाम नतो भेट पितरनसों न मुण्डहूमें बारहै ८ अपत उतार अपकार को अगार जग जाके छाहँ छुयेसहमत ब्याध बाधको । पातक पुहुमि पालिबे को सहसानन कपटको पयोधि अपराधको ॥ तुलसीसेबामकोभो दाहिनो दयानिधान सुनत सिहात सब सिद्धसाधुसाधुको। रामनाम ललित ललाम किये लाखनको बड़ो कूर कायर कपूत कौड़ी आधको ९ सब अंगहीन सब साधन बिहीन मनबचन मलीन हीन कूर करतूतिहौं । बुद्धि बलहीन भाव भगति बिहीन दीन गुण ज्ञान हीनहीन भागहूं बिभूतिहौं ॥ तुलसी गरीबकी गईबहोर रामनाम जाहि जपि जीह रामहूंको बैठोधूतिहौं। प्रीति रामनामसे प्रतीति रामनामकी प्रसाद रामनामके पसारि पाइँसूतिहौं १० मेरेजानि जबतेहौं जीवह्वै जनम्यों जग तबते बेसाह्यो दाम लोहकोहकामको। मनतिनहींको सेवातिनहीं सों भावनीको बचनबनाइकहौं हौंगुलामरामको ॥ नाथ हूं न अपनायो लोकरूठी ह्वै परीयै प्रभुहूते प्रबलप्रताप प्रभुनामको। अपनीभलाईभलो कीजैतो भलाईभलो तुलसीकोखुलै तोखजानो खोटेदामको ११ योगन बिराग जप योगतप त्यागब्रत तीरथन धर्मजानों वेदबिधिकिमि है। तुलसी सो पोचनभयोहै नहिं ह्वैहैकहूं शोचें सबयाके अघ कैसे प्रभुक्षमिहै ॥ मेरे तौनडर रघुबीरसुनो सांची

कहौं खलअनखैहैं तुम्हैं सज्जननि गमिहै । भलेसुकृतीके संग मोहिं तुलातौलियेतौ नामके प्रसादभार मेरीओरनमिहै १२ जातिके कुजातिके अजातिके पेटागिबश खाये टूक सबके विदित बात दुनीसो। मानस बचन काय किये पापसतिभाय रामको कहायदासदगाबाजपुनीसो॥ राम नामकोप्रभावपाउमहिमाप्रताप तुलसीसोंजगमानियत महा मुनीसो । अतिही अभागो अनुरागत न रामपद मूढ़ येतेबड़ो अचरज देखि सुनीसो १३ जायो कुलमंगन बधावनो बजायो सुनि भयो परिताप पाप जननी जनकको । बारेते ललात बिललातद्वारद्वार दीन जानतहौं चारि फल चारि हि चनकको ॥ तुलसीसो साहिब समर्थको सुसेवकहि सुनत सिहात शोच बिधिहूंगनक को । नाम राम रावरो सयानो किधौं बावरो जो करत गिरी ते गरू तृणते तनकको १४ वेदहूं पुराण कही लोकहूं बिलोकियत रामनामहीसों रीझै सकल भलाई है । काशिहूं मरत उपदेशत महेश सोई सांधन अनेक चितई न चितलाईहै ॥ छांछिकोललात जेते रामनाम के प्रसाद गत खुनसात शोधे दूधकी मलाई है । राम राज सुनियत राजनीति की अवधि नाम रामरावरे तो चामकी चलाई है १५ शोच संकटनि शोच संकटपरत जर जरतप्रभाउ नाम ललित ललामको । बूड़ियोतरतं बिगरीयो सुधरति बात होत देखि दाहिनोस्वभाव बिधि बामको ॥ भागत अभाग अनुराग सुविराग भाग जागत अलस तुलसीहूंसे निकाम को । धाइ धरि फिरिकै गोहारि हितकारी होत आईमीच मिटत जपतरामनाम

को १६ आंधरो अधम जड़ जाजरोजराज मन शूकर के सावक ढकाढकेलो मगमें । गिर्‌यो हिये हहरि हराम हो हराम हन्यो हाइ हाइ करत परीगो कालफंगमें ॥ तुलसी बिशोक ह्वै त्रिलोकपति लोक गयो नामके प्रताप बात बिदितहै जगमें । सोई रामनाम जो सनेह सों जपतजन ताकी महिमा को क्योंकही है जात अगमें १७ जपकी न तप खप कियो न तमाई योग योगन बिराग त्यागतीरथ न तनको । भाईको भरोसो न खरोसोबैरबैरी हूंसो बल अपनो न हित जननी जनकको ॥ लोकको न डर परलोकको न शोच देव सेवा न सहाय गर्व धामको न धनको । रामहींके नामतेजोहोइसोइ नीकीलागै ऐसोई स्वभाव कछु तुलसीके मनको १८ ईशना गणेश ना दिनेश न सुरेशसुर गौरि गिरापति नहिं तनु जपौं जपने । तुम्हरोई नामको भरोसो भव तरिबेको बैठे उठे जागत बागत सुख सपने ॥ तुलसीहै बावरो सोरावरोई रावरी सों रावरे हूं जानिजिय कीजिये जअपने । जानकी जीवनमेरे रावरे बदनफेरे ठाउँ न समाउँ कहुँ सकल निरपने १९ जाहिर जहानमें जमानो एकभांतिभयो बेंचिये बिबुध धेनु रासभी बेसाहिये । ऐसेउ कराल कलिकाल में कृपालु तेरे नाम के प्रताप न त्रिताप तन दाहिये ॥ तुलसी तिहारो मन बचन करमजन येहूनातोनेह निज ओरते निबाहिये । रंकके निवाज रघुराज राजा राजन के उमिरि दराज महाराज तेरी चाहिये २० स्वारथ सयानप प्रपंच परमारथ कहायो रामरावरो हों जानत जहान है । नाम के प्रताप बाप आजलौं निबाही नीकी

आगेको गोसाईं स्वामी सबल सुजानहै ॥ कलिकी कुचाल देखि दिन दिन दूनीदेव पाहरुईचोरहेरि हिय हहरानहै । तुलसीकीबलि बारबारहीं सम्हारकीवो यद्यपि कृपानिधान सदा सावधान है २१ दिन दिन दूनी देखि दारिद दुकालदुख दुरित दुराज सुख सुकृत सकोचहै। मांगे पै तपावत प्रचारि पातकी प्रचंड कालकी कराल तां भले को होत पोचहै ॥ आपने तो एक अवलम्बअबईभज्यो समर्थसीतानाथ सबसंकट विमोचहै । तुलसी की साहस सराहिये कृपालुराम नामके भरोसे परिनाम को निशोचहै २२ मोहमदमातो रातो कुमति कुनारि सो बिसारि वेद लोकलाज आकरो अचेतहै। भावै सोकरत मुख आवै सो कहत कछु काहूकी सहत नाहिं सरकस हेतुहै ॥ तुलसी अधिक अधमाईहूं अजामिल ते ताहूमें सहाय कलिकपट निकेतहै । जैबेकी अनेक टेक एक टेक ह्वैबेकी सोपेट प्रिय पूतहित रामनाम लेत है २३ जागिये न सोइये बिगोइये जनम जाइ दिनदुख रोइये कलेश कोहकामको। राजा रंक रागी औ बिरागी भूरि भागी ये अभागी जीव जरत प्रभाउ कलि बाम को ॥ तुलसी कबन्ध कैसो धाइबो बिचारु अंध धुंध देखियत जग शोच परिनामको। सोइबो जो रामके सनेह की समाधि सुख जागिबो जो जीहजपै नीके राम नामको २४ वरन धरमगयो आश्रम निवास तज्यो त्रास न चकित सोपरावनो परोसोहै । परमउपासना कुबासना बिनाशो ज्ञान वचन बिराग वेष जगतहरोसो है ॥ गोरख जगायो योग भगति भगायो लोग निगम

नियोग ते सो कलिहि छरोसोहै । कायमन वचन सुभा-
य तुलसी है जाहि रामनामको भरोसो ताहीको भरो-
सो है २५ सवैया ॥ वेद पुराण बिहाइ सुपंथ कुमारग
कोटि कुचालिचली है । कालकराल नृपाल कृपालन
राजसमाज बड़ोइछली है ॥ वर्ण बिभागन आश्रमधर्म
दुनी दुख दोष दरिद्र दली है । स्वारथको परमारथको
कलि रामको नाम प्रताप बलीहै २६ न मिटै भवसंकट
दुर्घटहै तपतीरथजन्म अनेक अटौ । कलिमें न विराग
न ज्ञानकहूं सब लागत फोकट झूंठजटौ ॥ नटज्योंनिज
पेट कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक ठाट ठटौ । तुलसी
जो सदासुख चाहिये तो रसना निशि बासर राम
रटौ २७ दमदुर्गम दानदया मखकर्म सुधर्म अधीन
सबै धनको । तपतीरथ साधन योग बिराग सो होई
नहीं दृढ़ता तनको ॥ कलिकाल कराल में रामकृपा
ल इहैअवलम्ब बड़ी मनको । तुलसी सब संयम हीन
सबै यकनाम अधार सदा जनको २८ पाइ सुदेह बिदेह
नदी तरणी न लही करणी न कछूकी । रामकथा बरणी
न बनाइसुनी न कथाप्रह्लाद न ध्रू की ॥ अबजोर जरा
जरिगातगये मनमानि गलानि कुबानि न मूकी । नीके
कै ठीकदई तुलसी अवलम्ब बड़ी उर आखर दूकी २९
रामबिहाइ मराजपते बिगरी सुधरी कबिकोकिलहूकी ।
नामहिते गजकी गणिकाहु अजामिल की चलिगै चल
चूकी ॥ राम प्रताप बड़े कुसभा जब जाइरही पति पंडु
बधूकी । ताको भलो अजहूं तुलसी जेहि प्रीति प्रतीतिहै
आखरदूकी ३० नाम अजामिल से खलतारण तारण

बारण बारबधूको । नामहरे प्रह्लाद ब्रिषाद पिता भय शासति सागरसूको ॥ नामसों प्रीति प्रतीति बिहीन गिलो कलिकाल कराल न चूको । राखिहैं रामसो जासु हिये तुलसी हुलसै बल आखरदूको ३१ घनाक्षरी ॥ खेती न किसानको भिखारीको न भीखबलि बणिकको वणिज न चाकर को चाकरी । जीविका ब्रिहीन लोग बिद्यमान शोचबश कहै एक एकनसों कहांजाइ काकरी ॥ बेदहूं पुराण कहा लोकहू बिलोकियत सांकरे सबै को रामरावरेकृपाकरी । दारिददशानन दबाईदुनी दीनबंधु दुरितदहतदेखि तुलसी हहाकरी ३२ कुलकरतूतिभूति कीरति सरूप गुण यौवन ज्वरजरत परत न कलू कही । राजकाज सुपथ कुसाजभोग रोगहीके वेदबुध विद्यापाइ बिबशबलकही ॥ गति तुलसीशकी लखत नहिं जो तुरत पविते करतक्षार पवि सो पलकही । कासोंकीजै रोषदोष दीजैकाहि पाहिराम कियो कलिकाल कुलि खललखल कही ३३ बबुरबहेरेको बनाइ बागलाइयत रूंधबेकोसो ऊसुरतरु काटियतहैं । गारीदेत नीच हरिचंदहूं दधीचिहूकी आपने चनाचबाइ हाथचाटियतहैं ॥ आपुमहापातकी हँसत हरिहरहूको आपुहै अभागी भूरिभागीडाटियतहैं । कलिकीकलुषमन मलिनकिये कहतमसककीपांसुरीपयोधिपाटियतहै ३४ सुनियेकराल कलिकाल भूमिपालतुम जाहिघालो चाहिये कहोधौं राखैताहिको । हौं तो दीन दूबरो बिगारों ढारों रावरो न मैंहूं तैंहूं ताहिको सकलजगजाहिको ॥ कामको हलाइकै देखाइयत आंखि मोहिं येते मान अकसकीबे को आपु आहिको । साहिब

सुजान जिनश्वानहूं को पक्ष कियो राम बौला नाम हौं
गुलाम राम साहिको ३५ सवैया ॥ सांची कहौं कलि-
काल कराल में डारों बिगारो तिहारो कहा है। कामको
लोभको क्रोधको मोहको मोहीं सो आनि प्रपंच रहाहै॥
हौं जगनायक लायकआजु पै मेरीयोटेव कुटेवमहा है।
जानकीनाथ बिना तुलसी जग दूसरेसो करिहै न हहाहै
३६ भागीरथी जल पानकरौं अरुनाम है राम के लेत
नितैहौं। मोसों न लेनो न देनो कछू कलिभूलि न रा-
वरे ओर चितैहौं ॥ जानिकै जोरि करौं परिणाम तुम्हैं
पछितैहौं पै मैं न भितैहौं। ब्राह्मण ज्यौं उगिल्यो उर-
गारि हौं त्योंहीं तिहारे हिये न हितैहौं ३७ राज मराल
के बालक पेलिकै पालत लालत खूसरको। शुचिसुंदर
सालि सकेलि सँवारिकै बीज बटोरत ऊसर को ॥ गुण
ज्ञान गुमान भभेरिबड़ोकल्पद्रुम काटत मूसरको। कलि-
काल बिचार अचारहरी सूझै न कछू धमधूसरको ३८
कीबे कहा पढ़िबेको कहा फल बूझिनबेदको भेदबिचा-
रयो। स्वारथको परमारथको कलिकामद राम को नाम
बिसारयो ॥ वाद विवाद बिषाद बढ़ाइकै छाती पराइ
औ आपनीजारयो। चारिहूको छहुको नवको दशआठ
को पाठ कुकाठज्यों फारयो ३९ आगम वेदपुराणबखा-
नत कोटिक मारग जाहि न जाने। जे मुनि ते पुनि
आपुहि आपुको ईशकहावत सिद्धसयाने॥ धर्मसबै क-
लिकाल ग्रसे जप योग बिराग लै जीव पराने। कोकरि
शोच मरै तुलसी हम जानकिनाथ के हाथ बिकाने४०
धूतकहौ अवधूतकहौ रजपूतकहौ जोलहा कहौकोऊ।

काहूके बेटीसो बेटा न ब्याहिहौं काहूकीजात बिगारन
सोऊ ॥ तुलसी सरनाम गुलामहै रामको ताकोंरुचैसो
कहै कछुओऊ । मांगिकै खैबो मजीत सोइबो लेबोन
एक न देबेकोदोऊ ४१ घनाक्षरी ॥ मेरे जाति पांति न
चहौं काहूकी जाति पांति मेरेकोउ कामको न हौं काहूके
कामको । लोक परलोक रघुनाथहीके हाथ सब भारी है
भरोसो तुलसीके एकनामको ॥ अतिही अयानेउपखाने
नहिंबूझैं लोग साहेब के गोत गोतहोत है गुलामको ।
साधुकै असाधुकै भलो कै पोच शोचकहा काहूकेदुआ-
रपरयो जो हौं सोहौं रामको ४२ कोऊ कहै करत कु-
साज दगाबाजबड़ो कोऊकहै रामकोगुलाम खरोखूबहै ।
साधुजानै महासाधु खलजानै महाखल बानीझूठीसांचो
कोटि उठत हबूब है ॥ चहत न काहूसो कहत न काहूको
कछुसबकी सहतउर अंतर न ऊबहै । तुलसी को भलो
पोच हाथ रघुनाथही के रामकी भगति भूमिमेरीसबदू-
बहै ४३ जागैं योगी जंगम यती जमाति ध्यानधरैं डरैं
डरभारी लोभमोह कोहकाम के । जागैं राजा राजकाज
सेवक समाजसाज शोचैंसुनिसमाचार बड़बैरी बामके ॥
जागैंबुध विद्याहित पण्डित चकित चित जागैं लोभी
लालचधरणिधन धामके । जागैं भोगीभोगहि बियोगी
रोगी रोगबश सोवैसुख तुलसीभरोसे एक रामके ४४
छप्पै ॥ राममातु पितुबंधु सुजनगुरु पूज्य परम हित ।
साहेब सखा सहाइनेह नातो पुनीत चित ॥ देशकोश
कुल कर्म धर्मधन धाम धरणि गति । जाति पांति सब
भांतिलागि रामहिं हमारिमति ॥ परमारथ स्वारथ सु-

थंश सुलभ रामते सकलफल।कहैतुलसीदास अब जब कबहुँएकरामतेमोरभल ४५ महाराजबलिजाउँरामसेव कसुखदायक। महाराज बलिजाउँरामसुंदर सबलायक॥ महाराज बलिजाउँ रामसंकट सब मोचन। महाराजब-लिजाउँ रामराजीवविलोचन॥ बलिजाउँरामकरुणायत नप्रणतपाल पातकहरण। बलिजाउँरामकलिभयबिकल तुलसिदास राखिय शरण ४६ जयताड़कासुबाहुमथन मारीचमानहर। मुनिमखरक्षनदक्ष शिलातारण करुणा कर॥नृपगणबल मदसहित शंभुकोदंडबिहंडन। जयकु-ठारधरदर्पदलन दिनकर कुलमंडन॥ जय जनकनगर आनंदप्रद सुखसागर सुखमा भवन। कहै तुलसिदास सुर मुकुटमणि जयजयजय जानकि रमन ४७ जय ज-यंत जयकर अनंत सज्जन जन रंजन। जयबिराधबध बिदुष बिबुध मुनिगण भयभंजन॥ जय निशिचरी कु-रूपकरन रघुबंश बिभूषण। सुभट चतुर्दश सहस दलन त्रिशिरा खरदूषण॥ जय दंडकबन पावन करन तुलसि-दास संशयशमन। जग बिदित जगतमणि जयति जय जयजय जय जानकि रमन ४८ जय माया मृग मथन गींध शवरी उद्धारण। जय कबंधसूदन बिशालतरुताल बिदारण॥ दवनबालिबलशालि थप्नसुग्रीवसंतहित। कपिकराल भट भालु कटकपालक कृपालचित॥ जय सियबियोग दुखहेतु कृत सेतुबंध बारिधि दमन। दश-शीश बिभीषणअभयप्रद जयजयजयजानकिरमन ४९ कनक कुधर केदार बीज सुंदरसुर मुनिवर। सींचिका-मधुक धेनु सुधामय पय बिशुद्धतर। तीरथपति अंकुर

स्वरूप यक्षेश रक्षतेहि । मरकतमणिशाखासुपुत्र मंजरी सुलक्षिजेहि ॥ कैवल्य सकलफल कल्पतरु शुभसुभाउ सबसुख बरिस । कहै तुलसिदास रघुबंशमणि तौकि होहि तबकर सरिस ५० जाइसो सुभट समर्थ पाइरण रारिन मंडै । जाइसो यती कहाइ विषै बासना न छंडै ॥ जाइ धनिक बिनुदान जाइनिर्द्धनी बिनुधर्महि । जाइसो पंडित पढ़ि पुराण जोरत न सुकर्महि ॥ सुतजाइ मातु पितुभक्ति बिनु तियसोजाइ जेहिपति न हित । सबजायँ दासतुलसी कहै जो न रामपद नेहनित ५१ कौनक्रोध निर्दहेउ कामबश केहिनहिं कीन्हों । कौनलोभ दृढ़फंद बांधित्रासन करि दीन्हों ॥ कवन हृदय नहिंलाग कठिन अतिनारि नयनशर । लोचनयुतनाहिं भयउअंध श्रीपाइ कवननर ॥ सुर नागलोक महि मंडलहु सो जो मोह कीन्हो जयन । कहै तुलसिदास सो ऊपर जेहि राखु राम राजीव नयन ५२ सवैया ॥ भौंह कमान सँधान सुठानजो नारि बिलोकनि बाणते बांचै । कोप कृशानु गुमान अवाघट जे जिनकेमन आंच न आंचै ॥ लोभसबै नटकेबशह्वै कपि ज्यों जगमें बहुनाच न नाचै । नीकेहैं साधु सबै तुलसी पै तेई रघुबीरके सेवक सांचै ५३ घनाक्षरी ॥ बेष सुबनाइ भले बचन कहै चुपाइ जाइ तौं न जरनि धरनि धनधामकी । कोटिक उपाइ करि लालि पालियत देह मुखकहियत गति रामही के नाम की ॥ प्रकटै उपासना दुरावै दुर्बासनाहि मानस नेवास भूमि लोभ मोह कामकी । रागरोग ईर्षा कपट कुटिलाई भरे तुलसीसे भगत भगति चांहैं रामकी ५४ कालिही

तरुणतन कालिही धरणि धन कालिही जितोंगोरण कहत कुचालि है। कालिही साधेंगो काज कालिही राजा समाज मोसों कोउ कहा भारे मही मेरुहालिहै ॥ तुलसी यही कुभांति घने घर घालिआये घनेघर घालत है घने घर घालि है। देखत सुनत समुझतहू नं सूझै सोई कबहूं कह्यो न कालहूको काल कालिहै ५५ भयो न तिकाल तिहूंलोक तुलसी सो मन्द नीदै सब साधु सुनि मानो न सकोचहौं। जानत न योगहिय हानिमानै जानकीश काहेको परेखोहौं पापी प्रपंची पोचहौं ॥ पेट भरिबे के काज महाराज को कहायो महाराजहूं कह्योहै प्रणत बिमोचहौं। निज अघजाल कलिकालकी करालता बिलोकि होत ब्याकुल करत सोई शोचहौं ५६ धरम को सेतुजग जंगल को हेतु भूमिभार हरिबेको अवतार लियो नरको। नीति औ प्रतीति प्रीतिपाल चालिप्रभु मान लोक.बेद राखिबेको प्रणरघुबरको ॥ बानरबिभीषणकी औरको कनावड़ोहै सो प्रसंगसुने अंगजरैअनुचरको। राखे रीति आपनी जो होइ सोइ कीजे बलि तुलसी तिहारो घरजाइ डहै घरको ५७ नाम महाराज के निबाही नीकी कीजै उर सबही सोहात मैं न लोगन सोहातहौं। कीजै राम बार एही मेरी ओर चषकोर ताहिलगि रंकज्यों सनेहको ललातहौं ॥ तुलसी बिलोकि कलिकालकी करालता कृपालको सुभाउ समुझत सकुचातहौं। लोक एकभांतिको त्रिलोकनाथ लोकबश आपनो न शोच स्वामी शोचही सुखातहौं ५८ तौलौं लोभ लोलुप ललात लालची लबार बारबार लालच

धरणि धन धामको । तबलौं बियोग रोग शोग भोग यातनाके युग सम लागत जीवन यामयामको ॥ तौलौं दुख दारिद दहत अति नित तन तुलसी हैं किंकर बिमोह कोह काम को । सबदुख आपने निरापने सकल सुख जौलौं जनभयो न बजाइ राजारामको ५९ तौलौं मलीन हीन दीन सुख सपने न जहां तहां दुखी जन भाजन कलेशको । तौलौं उबेन पाय फिरत पेटौखलाय बाये मुँह सहत पराभव देशदेशको ॥ तबलौं दयावनो दुसह दुख दारिदको सांथरीको सोइबोओढ़िबोदूनेखेश को । जबलौं न भजै जीह जानकीजीवन राम राजनको राजासोतोसाहेब महेशको ६० ईशनकेईश महाराजन के महाराज देवनके देवदेव प्रानहूंके प्रानहौ । कालहुं के काल महाभूतनकेमहाभूत कर्महूंके करम निदानके निदानहौ ॥ निगमको अगम सुगम तुलसीहूसेको एते मानशीलसिंधु करुणानिधान हौ । महिमा अपारकाहू बोलको न वारापार बड़ी साहिबीमें नाथ बड़े सावधान हौ ६१ सवैया ॥ आरतपाल कृपालजेराम जेहिसुमिरे तेहिको तहँ ठाढ़े । नाम प्रतापमहा महिमा अकरेकिये खोटेउ छोटेउबाढ़े ॥ सेवक एकतेएक अनेकभये तुलसी तिहूं तापनडाढ़े । प्रेमबदौं प्रह्लादहि को जिन पाहन ते परमेश्वरकाढ़े ६२ काढ़िकृपान कृपानकहूं पितुकाल कराल बिलोकि न भागे । रामकहां सबठाउँहैंखम्भ में हां सुनि हांकनि के हरिजागे ॥ बैरी बिदारि भयेबिकराल कहै प्रह्लादहि के अनुरागे । प्रीति प्रतीति बढ़ी तुलसी तबते सब पाहन पूजन लागे ६३ अंतर्यामि